SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 24 • ISSUE 08 • OCTOBER 2025

हिन्दी मासिक अक्तूबर 2025

सच्चा राही

लखनऊ

सामाजिक एवं साहित्यिक

क़ुरआन को व्यवहारिक जीवन में लाने की ज़रुरत

अगर आज हम मुसलमान अपनी ज़िन्दगियों में कुरआन का नमूना दिखाते तों मैं यकीन करता हूं कि आज दुनिया का नक़्शा ही कुछ और होता ! आज खुद हमारे मुल्क का नक़्शा ही कुछ और होता, कैसी मुहब्बत होती, कैसी दयानतदारी, कैसा फर्ज़ का एहसास होता, कैसे मुल्क की खिदमत का जज़्बा होता ।

अगर कुरआन पर अमल करके हम मुसलमान दिखाते तो सबको मालूम होता कि इन्सान का क्या मर्तबा है, इन्सान कैसी क़ीमती चीज़ है, इन्सान खुदा का कैसा प्यारा है ।

(हज़रत मौलाना सै. अबुल हसन अली नदवी रह 0)

एक प्रति ₹40/=

सरपरस्त
हज़रत मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ — 226007
समयः (8:00 am to 1:00 pm)
Mob. 7348339655
☎ 0522-2740406
E-mail:sachcharahi@nadwa.in
https://sachcha-rahi.nadwa.in/

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 40/-
वार्षिक	₹ 400/-
विदेशों में (वार्षिक) 60 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई—मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ
SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

अक्तूबर 2025 वर्ष 24 अंक 08

जिस दिल को घुन लग जाए

सज्जनो! हर ज़माने में कुछ अच्छे कुछ बुरे इन्सान हुये हैं लेकिन किसी व्यक्ति को या किसी विशेष वर्ग को तमाम बुराईयों का ज़िम्मेदार ठहराना ठीक नहीं। अगर कुछ लोग बुराईयों के आदी हो गये थे तो इसका मतलब यह नहीं कि पूरी सोसाइटी का हैन्डिल उनके हाथ में था वह जिस तरफ़ चाहते थे सोसाइटी को मोड़ देते थे, बल्कि बात यह है कि उस जमाने में सोसाइटी में स्वयं खराबी आ गई थी। उस समय की आत्मा गन्दी हो गयी थी। उसमें बुराईयों के प्रति लगाव उत्पन्न हो गया था। उसके अन्दर अन्धेर अत्याचार तथा कामनाओं को पूरा करने की प्रबल इच्छा पैदा हो गई थी। वह स्वार्थी, वह काम लोभी बन गई थी। जिस दिल को घुन लग जाये, जो मन पापी हो जाये, आप उसे अपराध से किसी प्रकार रोक नहीं सकते। आप उसे बेड़ियों में जकड़ कर भी रखेंगे तब भी इन चीजों से सुरक्षित नहीं रह सकता।

(मौलाना अली मियाँ नदवी रह0)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक मोहम्मद ताहा अतहर द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-8318047804

विषय एक दृष्टि में

कुरआन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
तालीम और तरबियत	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	08
समाज की बुराईयाँ	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	11
रबीउल अव्वल का अस्ल सन्देश	मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी रह0	13
भारत के अतीत में मुस्लिम	सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	16
संदूक़	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	18
अच्छे व्यवहार की शिक्षा	मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी	19
ज़ैतून की वादी में भूख का विलाप	मुहम्मद नफ़ीस खान नदवी	21
वमा अरसलनाक इल्ला	इं0 जावेद इक़बाल	22
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	25
दीनदारों के लिए काम के मैदान	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी रह0	26
भारत वासी भाई–भाई (पद्य)	अब्दुल रशीद नसीराबादी	28
मोमिन की सरबुलन्दी	सैयद सुफियान अहमद नदवी लखनवी	29
पत्रकारों का क़त्ल	नौशाद खान	33
करतूत	मायल ख़ैराबादी	36
क्या नहीं कहीं भगवान (पद्य)	मिर्जा अहमद याकूब	39
स्वास्थ्य	डॉ0 पूनम तिवारी	40
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	अबू अब्दुर्रहमान नदवी	41
अहले ख़ैर हज़रात से	इदारा	42

कुरआन की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-नहलः-

अनुवादः—

जिन्होंने इनकार किया है और अल्लाह के रास्ते से रोका है हम उनको अज़ाब पर अज़ाब देंगे इसलिए कि वे बिगाड़ मचाते रहते थे(88) और जब हम हर उम्मत (सम्प्रदाय) में उन्हीं में से एक गवाह उन पर खड़ा करेंगे और उन सब पर आप को गवाह लाएंगे[1] और हमने आप पर किताब उतारी जिसमें हर चीज का विवरण है और मुसलमानों के लिए हिदायत व दया (रहमत) और शुभसमाचार है(89) बेशक अल्लाह न्याय का और भलाई करने का और नातेदारों को देने (दिलाने) का आदेश करता है और अश्लीलता से और अशिष्ट काम से और सरकशी से रोकता है वह तुम्हें नसीहत करता है कि शायद तुम ध्यान दो[2](90) और जब भी प्रतिज्ञा करो तो अल्लाह की प्रतिज्ञा को पूरा करो और कसमों को पक्का करके तोड़ा मत करो जबकि अल्लाह को तुम अपने ऊपर गवाह बना चुके, तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उससे खूब अवगत है(91) और उस महिला की तरह मत हो जाओ जिसने बड़ी मेहनत से सूत कात कर फिर उसको उधेड़ कर छिन्न भिन्न कर डाला[3] कि अपनी कसमों को आपस के बिगाड़ का माध्यम बनाओ केवल इसलिए कि कुछ लोग दूसरों से अधिक लाभ प्राप्त कर लें इससे तो अल्लाह तुम्हारा परीक्षण करता है और वह अवश्य कयामत के दिन उन वस्तुओं को खोल देगा जिसमें तुम झगड़ते रहे हो(92) और अगर चाहता तो अल्लाह तुम सब को एक ही उम्मत (सम्प्रदाय) बना देता लेकिन वह जिसे चाहता है पथभ्रष्ट करता है और जिसे चाहता है संमार्ग दिखाता (हिदायत देता) है और तुम जो कुछ करते हो उसके बारे में तुमसे अवश्य पूछताछ होगी(93) और अपनी क़समों को आपस में उपद्रव पैदा करने का साधन मत बनाओ कि कहीं कोई कदम जमने के बाद उखड़ न जाए और तुम्हें अल्लाह के रास्ते से रोकने के कारण बुरा मजा चखना पड़े और तुमको बड़ा अज़ाब (दण्ड) हो[4](94) और अल्लाह की प्रतिज्ञा (अहद व पैमान) को थोड़ी कीमत में बेच मत डालो, जो भी अल्लाह के पास है वह तुम्हारे लिए बहुत बेहतर है अगर तुम जानते हो(95) तुम्हारे पास जो भी है वह समाप्त हो जाएगा और जो अल्लाह के पास है वह बाकी रहने वाला है और जो भी कदम जमाए रखेंगे हम ज़रूर उनको उनके बेहतर कामों का बदला प्रदान करेंगे(96) ईमान की हालत में जो भी भला काम करेगा वह मर्द हो या औरत हम उसको ज़रूर पवित्र जीवन प्रदान करेंगे और जो कुछ वे किया करते थे उनके उत्तम कामों का बदला हम उनको जरूर प्रदान करेंगे(97) तो जब भी आप कुरआन पढ़ें तो शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह चाहें[5](98) बेशक उसका उन लोगों पर कुछ भी जोर नहीं जो ईमान लाए और वे अपने पालनहार ही पर भरोसा रखते

हैं(99) उसका जोर तो उन लोगों पर है जो उससे दोस्ती रचाते हैं और जो उसके कारण शिर्क करने वाले हैं(100) और जब हम एक आयत को दूसरी आयत से बदलते हैं और अल्लाह ही बेहतर जानता है कि वह क्या उतारे तो वे (काफिर) कहते हैं बेशक तुम्हीं तो गढ़–गढ़ कर लाने वाले हो, बात यह है कि उनमें अधिकांश लोग जानते नहीं[6](101) कह दीजिए इसको आपके पालनहार की ओर से रूहुल कुदुस ठीक–ठीक ले कर आए हैं ताकि वे ईमान वालों का कदम जमाए रखें और हिदायत (मार्गदर्शन) व शुभ समाचार हो मुसलमानों के लिए(102)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. सारे पैगम्बर अपनी कौमों पर गवाही के लिए पेश होंगे और हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी उम्मत के लिए गवाही देंगे और पैगम्बरों के लिए भी गवाही देंगे।

2. ऊपर पवित्र कुरआन को ''तिब्यानन् लिकुल्लि शैइन'' कहा गया था यह आयत उसका नमूना है, हजरत अब्दुल्लाह पुत्र मसऊद रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह तआला ने हर एक भलाई व बुराई के बयान को इस आयत में इकट्ठा कर दिया है, हजरत उमर पुत्र अब्दुल अजीज की आदत थी कि वे इस आयत को जुमे के खुत्बे में अवश्य पढ़ा करते थे, आज भी उस पर अमल हो रहा है, आयत में तीन चीजों का आदेश है, एक न्याय जिसका मतलब यह है कि आदमी सारे अकायद (विश्वासों) व कामों में शिष्टाचारों और मामलों आदि में संतुलन व न्याय के साथ हो, दुश्मन के साथ भी न्याय का व्यवहार हो, अन्दर व बाहर एक जैसा हो, दूसरे एहसान– जिसका अर्थ यह है कि आदमी खुद भलाई की मूर्ति बनकर दूसरों के लिए भलाई चाहे, न्याय व इन्साफ से थोड़ा बुलंद होकर माफ करने की आदत डाले, तीसरी बात नातेदारों से संबंधित है कि उनके साथ थोड़ा बढ़कर शिष्टता का व्यवहार किया जाए, और इस आयत में जिन तीन चीजों से रोका गया है वे सारी बुराइयों के तीन आधार हैं, इससे हर बुराई की जड़ कट कर रह जाती है।

3. मक्का में एक पागल महिला थी जो दिन भर सूत कातती शाम को सब उधेड़ डालती, यह महिला उन लोगों के लिए मसल (कहावत) बन गई जो अच्छा काम करके बिगाड़ दे, यहां यह उपमा उन लोगों के लिए प्रयोग हुई है जो जोर–शोर से किसी बात की कसम खाकर उसको तोड़ दें मात्र सांसारिक साधारण लाभ के लिए। आगे आयत में ''दखलन'' का शुद्ध प्रयोग हुआ है जिसका प्रयोग अरबी भाषा में आंतरिक दुश्मनी और बिगाड़ के लिए होता है, इसलिए यहां इसका अनुवाद ''बिगाड़'' से किया गया।

4. अगर तुम कसमें तोड़ोगे और उसको दुनिया कमाने का साधन बनाओगे तो हो सकता है कि दूसरों की भी पथ–भ्रष्टता का करण बनने और उसके कारण तुम्हें दोहरा भुगतान भुगतना पड़े, साधारण लाभ के लिए अल्लाह की प्रतिज्ञा को तोड़ मत डालो, तुम्हारे लिए जो अल्लाह के पास है वह कहीं बेहतर है, बस जो ईमान के साथ भलाई करता रहेगा तो उसको हम दुनिया में भी सुकून का जीवन देंगे और आख़िरत में भी उसका अच्छा बदला प्रदान करेंगे।

शेष पृष्ठ ...38.......पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

एहसान शनासी (कृतज्ञता) का बयानः-

दुनिया की दो आजमाइशें (परीक्षायें):–

हजरत अबू सईद खुदरी रजि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल स० ने फरमाया दुनिया मीठी और हरी–भरी है, अल्लाह तुमको इसका प्रतिनिधि बनाएगा और देखेगा कि तुम कैसे कर्म करते हो, दुनिया से बचो और औरतों से बचो, इसलिए कि पहला फित्ना (आजमाइश) बनी इसराईल में औरतों को लेकर ही पैदा हुआ था। (मुस्लिम)

नेकी और भलाई हर हाल में फायदा देती है:–

हज़रत अबूजर और हजरत मुआज बिन जबल रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया– हर हाल में अल्लाह से डरो, कोई बुराई हो जाए तो तुरन्त नेकी करो, वह उसको मिटा देगी, और लोगों से अच्छे अख़्लाक़ (सद्व्यवहार) से पेश आओ।

(तिर्मिजी)

जन्नत और जहन्नम में ले जाने वाली चीजें:–

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 से पूछा गया– कौन सी चीज लोगों को सबसे ज़्यादा जहन्नम में ले जाने वाली है? आप सल्ल0 ने फरमाया– जबान और शर्मगाह। आप सल्ल0 से पूछा गया कि कौन सी चीज़ लोगों को जन्नत में ले जाने वाली है? आप सल्ल0 ने फरमाया–अल्लाह का डर और अच्छे अख़्लाक़ (सद्व्यवहार)।

(तिर्मिजी)

संदिग्ध चीजों से बचना ज़रूरी:–

हज़रत नोमान बिन बशीर रजि० से रिवायत है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 को फरमाते हुए सुना है कि ''हलाल'' (जो सही और वैध है) खुला हुआ और जाहिर है, और हराम (अवैध) भी खुला और साफ है, इन दोनों के बीच कुछ चीजें मुश्तवबह (संदिग्ध) हैं जिनको बहुत से लोग नहीं जानते कि हलाल है या हराम। जो आदमी (अपने आपको) इन संदिग्ध चीजों से बचा लेगा उसने (मानो) अपने मान–सम्मान को बचा लिया। और जो उन चीजों में पड़ा वह हराम में पड़ा, जैसे शाही चरागाह के करीब चराने वाला खतरे में होता है कि कहीं उसका जानवर अन्दर न चला जाए। सुन लो कि हर बादशाह की एक चरागाह होती है। सुन लो! अल्लाह की चरागाह हराम व हलाल चीजें हैं। और सुन लो! शरीर के अन्दर एक लोथड़ा है, वह जब तक सही और दुरुस्त रहेगा सारा शरीर दुरुस्त रहेगा और जब वह खराब हो जाए तो सारा शरीर खराब हो जाएगा। और सुन लो! वह दिल है।

(बुखारी व मुस्लिम)

अच्छे और बुरे का फैसला दिल करता है:–

हज़रत वाबिसा बिन मअब्द रज़ि0 से रिवायत है वह फरमाते हैं कि मैं अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास आया, आप सल्ल0 ने फरमाया– तुम नेकी (भलाई) के बारे में पूछने आए हो? मैंने कहा हाँ, तो आप सल्ल0 ने फरमाया– (किसी काम के अच्छे या बुरे होने के बारे में) अपने दिल से पूछो, जिस काम से दिल सन्तुष्ट हो वह भलाई और नेकी है और जो दिल में खटके और दुविधा में डाल दे वह गुनाह (बुरा) है, चाहे लोग फतवा दें और दुरुस्त कहें।

(बुखारी व मुस्लिम)

खुदा का डर रखने वाला बन्दा बनने के लिए कुछ जायज़ कामों का भी छोड़ना:–

हज़रत अतिय्या बिन उर्वः रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया– बन्दा उस समय तक ईमान वाला नहीं हो सकता जब तक कि वह उस चीज को भी न छोड़ दे जिसमें कोई हरज (रुकावट) नहीं, है, केवल इस डर से कि कहीं इसमें कोई हरज हो।

(तिर्मिजी)

❖❖❖

तालीम और तरबियत

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

इन्सान के लिए हर हाल में अच्छी तालीम और अच्छी तरबियत का होना अनिवार्य है इसके बिना इन्सान, इन्सान नहीं कहलाएगा, यही वह विशेषता है जिसके द्वारा इन्सान और पशु के बीच अन्तर होता है। अच्छी तालीम वही है जिसको प्राप्त करने के बाद अपने लिए और पूरी इन्सानी बिरादरी और मानव समाज के लिए इन्सान लाभदायक हो।

आज का ज़माना शिक्षा और तालीम का है, प्राथमिक स्तर से विश्वविद्यालय स्तर तक गाँव—गाँव नगर नगर स्कूल और कालेज खुले हुए हैं और हर दिन इन की संख्या बढ़ रही है, लेकिन इसके बावजूद समाज में कोई सुधार नहीं हो रहा है, घर से बाहर तक बिगाड़ फैलता जा रहा है, नैतिकता और ईमानदारी का अभाव है, जिसकी वजह से हर आदमी चाहे ग़रीब हो या अमीर, शहरी हो या देहाती, परेशान है, समस्याएं और मसाएल बढ़ते जा रहे हैं, हर आदमी स्वार्थी और दौलत का पुजारी बनता जा रहा है, धन दौलत को पाने के लिए जाएज़ नाजाएज़ की सीमाएं तोड़ता है, यह सारा बिगाड़ इसलिए है कि इन्सान को इस दुनिया के बनाने वाले और पालनहार के सामने अपनी ज़िन्दगी की जवाबदही का कोई डर नहीं, कुरआन तो यह कहता है कि ये दुनिया की नेमतें जो तुम्हें मिली हैं उनके बारे में तुमसे ज़रूर पूछा जाएगा, क़यामत की घड़ी सख़्त घड़ी होगी जिस रोज़ सारे इन्सान अपने वास्तविक स्वामी और पालनहार अल्लाह के सामने हाज़िर होंगे, अल्लाह के अन्तिम रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः— कि क़यामत के दिन इन्सान के क़दम अल्लाह के सामने से नहीं हटेंगे जब तक उससे पाँच चीज़ों के बारे में न पूछ लिया जाए।

1. उम्र किन कामों में गुज़ारी?
2. जवानी को कहाँ खपाया?
3. माल कहां से कमाया?
4. और माल कहां खर्च किया?
5. इल्म के बारे में सवाल होगा कि उसके मुताबिक़ तुमने क्या अमल किया?

यदि इन्सान सोच ले तो ईमानदारी के साथ उपरोक्त सवालों का जवाब देना कितना कठिन होगा, अल्लाह के सामने अपनी हाजिरी को याद करे, वह अल्लाह जिसके सामने हमारी आँखों और दिलों की खियानत (चोरी) छुपी नहीं, अल्लाह वह ज़ात है जो हर समय और हर जगह हाज़िर व नाज़िर है।

इस्लाम एक सम्पूर्ण जीवन व्यवस्था है जिसमें पैदाइश से मौत तक अल्लाह के आदेश हैं यदि उन आदेशों के अनुसार ज़िन्दगी गुजारी जाय तो इन्सान को सफलता और सम्मान मिलेगा, कुरआन आदेश दे रहा हैः— ''ऐ ईमान वालो! अल्लाह का लिहाज़ रखो और हर व्यक्ति खूब देख ले कि उसने कल के लिए क्या तैयारी की है और अल्लाह से डरते रहो, बेशक तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उसकी खूब ख़बर रखता है, और उन लोगों की तरह मत हो जाना जिन्होंने अल्लाह को भुला दिया, तो अल्लाह ने उनको ऐसा बना दिया कि वे अपने आप को भूल गये, वही लोग हैं जो नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) हैं''।

(सूरः अल हश्रः 17—18)

इस समय इन्सान दुनिया में इतना मगन और खोया हुआ है जिसकी वजह से वह खुदा फ़रामोश और आख़िरत फ़रामोश हो गया और वह नहीं समझता कि वह अपने पालनहार अल्लाह

के सामने जवाबदेह होगा, जिसका बयान कुरआन की उपरोक्त आयतों में किया गया है।

इस्लाम ने तालीम और तरबियत को प्राथमिकता दी कुरआन की नाज़िल होने वाली सबसे पहली आयत तालीम से संबंधित हैः ''पढ़िये अपने उस पालनहार के नाम से जिसने पैदा किया, जिसने इन्सान को ख़ून के एक लोथड़े से बनाया, पढ़ते जाइये और आपका पालनहार सबसे ज़्यादा करम करने वाला है, जिसने क़लम से ज्ञान दिया, इन्सान को वह सिखाया जो वह जानता न था'', यह पाँच आयतें वह हैं जो सबसे पहले हज़रत मुहम्मद सल्ल0 पर उतरीं, जब आप सल्ल0 ग़ारे हिरा में इबादत में व्यस्त थे, इस प्रकार इस पहली ''वही'' से बता दिया गया कि इस्लाम धर्म का आधार ज्ञान (इल्म) पर है और इस उम्मी पैगम्बर के द्वारा यह बताया गया कि ज्ञान का साधन क़लम है लेकिन आप सल्ल0 को अल्लाह की ओर से बिना किसी माध्यम के वे ज्ञान प्राप्त होंगे जिनसे क़यामत तक दुनिया फ़ायदा उठाती रहेगी, साथ—साथ यह बात भी साफ़ करदी गई कि ''ज्ञान'' लाभ जब ही पहुँचाएगा जब वह अल्लाह के नाम की छाया में होगा, इसी लिए ''इक़रा'' के साथ बिस्मि रब्बिक'' की कैद भी लगा दी गई। यह कुरआन की सूरः अलक़ की शुरु की पाँच आयतों का अनुवाद और व्याख्या थी जो तालीम और शिक्षा से संबंधित है। अच्छी तालीम और अच्छी तरबियत के बिना समाज को अच्छा इन्सान नहीं मिल सकता, कुरआन तालीम के साथ तरबियत पर बहुत ज़ोर देता है, ताकि मानव समाज हर प्रकार की बुराइयों से पाक हो, सूरः इसरा की आयतें 23 से 39 तक तरबियत और नैतिकता की शिक्षा पर आधारित हैं जिसकी तफ़सील क्रमानुसार निम्नलिखित है—

1. एक अल्लाह की इबादत की जाए।

2. माँ—बाप के साथ अच्छा व्यवहार किया जाए।

3. हर समय यह ध्यान रहे कि अल्लाह तआला दिलों के भेदों को जानता है, इस अक़ीदे और एहसास से इन्सान तनहाई में और पोशीदा जगहों में गुनाह करने की हिम्मत नहीं करेगा और समझेगा कि अल्लाह हमारा निगराँ है।

4. रिश्तेदारों ग़रीबों निर्धनों के साथ अच्छा व्यवहार हो।

5. ज़िन्दगी गुज़ारने में सादगी हो, फुजूल ख़र्ची से बचा जाए, कन्जूसी न की जाए, जब रोज़ी कमाए तो यह ख़्याल रहे कि यह अल्लाह का दिया हुआ रिज़्क़ है इसलिए इसको सही तरीक़ों से हासिल किया जाए और जायज़ जगहों पर ख़र्च किया जाए।

6. इस्लामी विशेषताओं वाले समाज की रचना के लिए औलाद की अच्छी तरबियत की जाए।

7. इच्छाओं की पूर्ति में वस्तुओं का दुरूपयोग न हो ताकि समाज में नैतिक और समाजी बिगाड़ न पैदा हो।

8. क़त्ल नाहक़ से बचा जाए ताकि शान्ति का माहौल बना रहे, इन्सानी ज़िन्दगी सुरक्षित रहे, और ऐसा समाज वजूद में आये जो शान्ति पूर्ण हो।

9. यतीम (अनाथ) के माल पर कबज़ा करने से बचे।

10. अहदो पैमान (आपसी समझौता, प्रतिज्ञा) को पूरा किया जाए।

11. नाप तौल में कमी न की जाए।

12. दूसरों की टोह में न पड़ा जाए, और अफ़वाहें न फैलाई जाएं।

13. घमण्ड, ग़ुरूर अभिमान से बचा जाए।

इस्लामी निज़ामे तरबियत के इस विश्वव्यापी और मानवीय चार्टर की बराबरी सभ्य दुनिया का कोई भी निज़ाम नहीं कर सकता, इस्लामी निज़ामे तरबियत सबसे पहले इन्सान की फ़िक्र, अक़ीदा, व्यवहार और भावना का सुधार करता है, फिर उसकी सलाहियत को तरक़्क़ी देता है, व्यक्तिगत और सामूहिक ज़िन्दगी की भरपूर रहनुमाई

करता है और इन्सान को निजी फ़ाएदे के सीमित सीमा से निकाल कर उच्च उद्देश्य के मार्ग की रहनुमाई करता है और ज़िन्दगी के उच्चतम कल्पनाओं से परिचित कराता है।

उपरोक्त कुरआनी आयात जिनमें तालीम व तरबियत के मौलिक बिन्दुओं को बयान किया गया, और दुनिया में इन्सान के मक़सदे ज़िन्दगी और उसके मनसब को बताया गया है, उस पर ग़ौर करने से यह बात स्पष्ट होती है कि इस्लामी निज़ामे तरबियत ही इन्सानी समाज में पाये जाने वाले बिगाड़ का यह एक मात्र इलाज है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान है कि मुझे उत्तम नैतिकता की पूर्ति के लिए ही भेजा गया है, हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ि0 फरमाती हैं आप सल्ल0 के अख़लाक़ कुरआन का अक्स हैं, इरशाद बारी तआला है ''निश्चित रूप से तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में बेहतरीन आदर्श मौजूद है इसलिए कि जो अल्लाह और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखता हो और उसने अल्लाह को बहुत याद किया हो''।

(सूरः अहज़ाब आयत—21)

आप कह दीजिए, अगर तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरी राह चलो, अल्लाह तुमसे प्रेम करने लगेगा और तुम्हारे गुनाहों को मॉफ कर देगा और अल्लाह बहुत माफ करने वाला अत्यन्त दयालु है''।

(सूरः आले इमरान आयत—31)

अच्छी तालीम और तरबियत के प्रसंग में आप से विस्तार पूर्वक बात हुई, अपनी बात के समर्थन और पुष्टि में एक बड़े और बुजुर्ग आलिमे दीन आल इण्डिया मानवता फोरम के अध्यक्ष मौलाना सय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी का सम्बोधन पेश कर रहा हूं मौलाना फरमाते हैं— ''एक ज़माना था कि तालीम इन्सान की सफलता व कल्याण का साधन था उससे इन्सानों को इन्सान बनाया जाता था और उसको ज़िन्दगी का सलीका सिखाया जाता था, तालीम से इन्सान के अन्दर वह उच्च विशेषताएं पैदा होती थीं जिनसे वह ''बुलन्द पाया'' (सर्वोच्य) इन्सान बनता था, उसके अन्दर इन्सानियत के जौहर पैदा होते थे, वह दूसरों के काम आता था, लोगों को इन्सानियत सिखाता था, ईसार व कुरबानी, अख़लाक़ व मुहब्बत जैसी विशेषताओं से वह सुसज्जित होता था, सारांश यह है कि इल्म और अख़लाक़ का चोली दामन का साथ था, आज इल्म टेक्नालाोजी के मैदान में बहुत आगे बढ़ गया है लेकिन अख़लाक़ के जौहर से खाली हो गया, उसका नतीजा यह है कि उससे बजाए मानवीय विशेषताएं रखने वालों के जानवरों की विशेषताएं रखने वाले पैदा हो रहे हैं।

आज इल्म एक बिज़नेस बनकर रह गया है, इन्सान लाखों लाख रूपया देकर इल्म हासिल करता है और फ़ारिग़ हो कर उसी की वसूलयावी में पूरी तरह लग जाता है और उसमें वह हर तरह की सीमाओं को पार कर जाता है, अगर उसने करोड़ों रूपये देकर पढ़ा है तो पहले मरहले में फ़ारिग़ होने के बाद उसको वह करोड़ों रूपये याद आते हैं और वह हर सूरत में उसको सूद समेत वापस लेना चाहता है, एक ज़माना था कि डॉक्टर दिलासा देता था, आज डॉक्टर को दिये हुए पैसे वापस लेने हैं, वह मरीज़ से आप्रेशन की मेज़ पर सौदा करता है और उसकी जान से खेलता है और मसअला सिर्फ डॉक्टरां का नहीं, उनकी मिसाल तो सिर्फ़ इसलिए पेश की गई कि वह सबसे बढ़ कर इंसानों के मसीहा रहे हैं लेकिन आज मामला बिल्कुल उलटा है। इल्म व अख़लाक़ के असंतुलन ने दुनिया को जहन्नमकदा बना दिया है— इन्सानों की दुनिया में जानवरों का तरीक़ा आज रायज़ व प्रचलित हो रहा है, स्वार्थप्रथा का मिज़ाज बनाया जा रहा है

शेष पृष्ठ....12....पर

पिछले अंक से आगे

समाज की बुराईयाँ और उनका इलाज

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

ज़बान की बे एहतियातियाँ:-

ज़बान अल्लाह की एक बड़ी नेमत है, लेकिन सब से ज़्यादा इसी नेमत की ना कदरी होती है, और इसका बेजा इस्तेमाल किया जाता है, इस वक्त समाज के बिगाड़ का शायद सबसे बड़ा सबब जबान की बे एह्तियातियाँ है, बहुत कम लोग होंगे जो शब्द तौल तौल कर बोलते हैं, और जिनका अमल आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इरशाद पर है किः—

अनुवादः— "जो खामोश रहा, वो बच रहा"।

(तिर्मिजीः 2689)

आदमी जब बोलने पर आता है तो भूल जाता है कि वो क्या क्या जबान से निकाल रहा है और उसका क्या नतीजा निकलेगा, एक लम्बी हदीस आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हजरत मुआज बिन जबल रज़ियाल्लाहू अन्हु के सवाल के जवाब में इस्लाम के हुक्मों का स्पष्ट बयान किया, फिर फरमाया किः—

अनुवादः— "क्या मैं तुम्हें इन तमाम का असल न बताऊँ, (हजरत मुआज कहते हैं कि) मैंने अर्ज किया: ज़रूर इरशाद फरमाएँ, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जबान की तरफ इशारा करते हुए फरमायाः "इसको काबू में रखो" मैंने अर्ज किया कि ऐ अल्लाह के नबी! जो हम बात करते हैं इस पर भी हमारी पकड़ होगी, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः ऐ मुआज! अल्लाह तुम्हारा भला करे, लोगों को मुंह के बल आग में उनकी जबान की बक—बक ही तो ले जाएगी"।

(तिर्मिजीः 2825)

ये हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मोजिजा वाला बयान है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हदीस में इसकी बेहतरीन मिसाल पेश की कि जिस तरह दरांती या हसिया से खेत काटे जाते हैं और न जाने उसके साथ क्या क्या घांस फूस भी कट जाती है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

अनुवादः— "लोग जहन्नम में अपनी जबान के अनुचित इस्तेमाल के नतीजे में जाएँगे। "हसीद" का बहुवचन हसायद है। "हसायद" उस खेती को कहते हैं जिसे दरांती से काटा जाता है। हदीस में ज़बान की यही मिसाल दी गई है। जब कोई इंसान बिना किसी एहतियात के इसका इस्तेमाल करता है, तो वह अपनी जबान से ऐसी बातें कह देता है जो उसे जहन्नम के रास्ते पर ले जाती हैं। और कभी—कभी उसे इसका एहसास भी नहीं होता। वह अपनी जबान से अनगिनत दिलों को चीर देता है, कई परिवारों में दरारें पैदा करता है, मर्द—औरत में जुदाई डालता है, नफरतों के बीज बोता है, बदगुमानियां पैदा करता है और पूरे समाज को तबाह कर के रख देता है, एक अरबी शायर कहता हैः—

"बरछों के घाव भरे जा सकते हैं, लेकिन जबान जो घाव लगाती है उसका कोई इलाज नहीं"

हालात के खराब होने की बड़ी वजह यही जबान है, ये अगर काबू में आ जाए तो हालात संवर जाते हैं, अल्लाह तआला इरशाद फरमाता हैः

अनुवादः— "ऐ ईमान वालो! अल्लाह का लिहाज रखो और

जँची–तुली बात कहो, वो तुम्हारे लिए कामों को बना देगा और तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देगा"।

(अल–अहजाबः 70–71)

एक हदीस में आप सल्ल0 ने फरमाया किः "तुम दो चीज़ों की ज़मानत लेलो, मैं जन्नत की ज़मानत लेता हूँः मुँह और शर्मगाह (गुप्तांग)।

(तिर्मिजीः2135)

जाहिर है मुँह में ज़बान ऐसी चीज है जो आदमी को बर्बादी के खोह में गिराती है, एक तरफ तो ज़बान का चटखारा उसको हलाल व हराम के फर्क से रोक देता है, और एक इंसान थोड़े से मज़े के लिए सब कुछ कर गुज़रता है, और इससे बढ़ कर इसका गलत इस्तेमाल है, और जबान की बे एह्तियातियाँ हैं, कभी कभी एक छोटा सा जुमला आदमी को पाताल में पहुंचा देता है।

इब्ने अब्बास रज़ियाल्लाहू अनहु की एक हदीस में आता है कि "कभी कभी आदमी एक अच्छी बात कहता है जो आसमान की बुलंदियों तक ले जाती है और कभी छोटी सी बात कहता है जो उसको पाताल में गिरा देती है"।

(बुखारीः 6478)

एक सहाबी ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा किः "निजात का रास्ता क्या है?" आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः ''ज़बान को काबू में रखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिए काफी हो और अपनी गलतियों पर रोवो''।

(तिर्मिजीः 2586)

एक हदीस में आपने फरमायाः– "खामोशी अपनाओ, इस से शैतान भागता है"।

(अल–तरगीब वल तर्हीबः 531/3)

सच्चाई ये है कि समाज का बिगाड़ जबान की बे एह्तियातियों का नतीजा है, इसकी शक्लें अलग अलग हैं, झूठ, गीबत, आरोप, चुग़लखोरी, अपशब्द बोलना ये सब ज़बान के बड़े बड़े गुनाह हैं, जो एक गुनाह करने वाले के लिए वबाल हैं, दूसरी तरफ़ समाज के लिए किसी नासूर से कम नहीं हैं।

❖❖❖

पृष्ठ...10....का शेष

जो इन्सानों को हलाकत के ग़ार में गिराने के लिए तैयार है, अगर लोगों का ज़ेहन ठीक नहीं किया गया और ज़ुल्म ज़्यादती और स्वार्थप्रथा का मिज़ाज (स्वभाव) न बदला गया तो दुनिया का ख़ुदा ही हाफिज़ है।

इस समय जिस तरह क्रप्शन बढ़ रहा है जीवन के हर विभाग में जिस तरह रिश्वत ख़ोरी काम चोरी बढ़ती जा रही है, ज़िम्मेदारी का एहसास ख़त्म होता जा रहा है और इन्सान केवल अपना फ़ाइदा देखता है और यह चीज़ बढ़ कर इस हद तक पहुंच गई है कि बेटे को न बाप का पास है न बाप के अन्दर बेटे की मुहब्बत है, *Self System* इतना आगे बढ़ गया है कि वह स्वार्थप्रथा की चरम सीमा को पहुंच रहा है, यह सिर्फ़ इसलिए है कि इल्म और अख़लाक़ में संतुलन नहीं रहा, शुरु से बच्चे को स्वार्थ की तालीम दी जाती है, अख़लाक़ी और नैतिक शिक्षा तो पहले अनिवार्य समझी जाती थी, अब बराए नाम रह गई है। ये इल्म व अख़लाक़ का असंतुलन है जिसने दुनिया को तबाही के किनारे खड़ा कर दिया है। यह ज़िम्मेदारी सबसे बढ़कर मुसलमानों पर है कि वह दुनिया को अख़लाक़ और मुहब्बत का पाठ पढ़ाएं और नबी–ए–रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिये हुए दीने रहमत से मानव जगत को परिचित कराएं और नैतिक शिक्षा को शीरो शकर (अति सम्पर्क) करदें कि वह एक खूबसूरत गुलदस्ता बन कर सामने आए और दुनिया उसकी खुशबूदार हवाओं से सुगंधित हो जाए।

❖❖❖

रबीउल अव्वल का अस्ल सन्देश

मौलाना सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी रह0

एक ख़ुदा की बन्दगी और रसूल0 सल्ल0 की ताबेदारी और मुहब्बतः—

मिल्लते इस्लामिया का वजूद और उसकी स्थिरता जिन विशेषताओं से सम्बन्धित है, वह एक खुदा की बन्दगी, और अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ताबेदारी और आप की मुहब्बत है। तौहीद (एक खुदा पर विश्वास) की विशेषता तो मुसलमानों को शिर्क करने वाली क़ौमों और व्यक्तियों से अलग करके एक खुदा की उपासना और उसी के आदेशों को मानने वाला बनाती है। दूसरी विशेषता अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ताबेदारी और यह आस्था कि आप सल्ल0 अल्लाह ही आख़िरी नबी हैं और आप का लाया हुआ दीन आख़िरी और मुकम्मल दीन है। यह विशेषता सभी मुसलमानों को एक मज़बूत और एकताबद्ध क़ौम बनाने वाली है। मिल्लते इस्लामिया की यह दो विशेषताएं न केवल इसे दूसरी क़ौमों से विशिष्ट (मुम्ताज) बल्कि उनके द्वारा मुसलमानों में ऐसी एकता, मेल मिलाप और मुहब्बत पैदा करती हैं जिसकी मिसाल दूसरी क़ौमों में नहीं मिलती।

इसलिए कि तौहीद (एकेश्वरवाद) के अक़ीदे के अतिरिक्त कोई ऐसी प्रभावी शक्ति नहीं है जो किसी कौम में एक रूपता और एका पैदा करे और अन्तिम रसूल के अन्तिम सन्देश और मुकम्मल दीन पर आस्था और उनकी मुहब्बत उम्मत के लोगों में जो भाई चारा और प्रेम पैदा करती है और मुस्लिम देशों के हर देश के मुसलमानों को एक दूसरे से जिस प्रकार जोड़ती है उस प्रकार कोई और साधन जोड़ पैदा नहीं कर सकता।

चुनांचे मुसलमानों में रंग, नस्ल, भाषा, संस्कृति क्षेत्रीय और मातृभूमि की तरह की भिन्नता के बावजूद भाईचारगी और सम्बन्धों का ऐसा वातावरण बन जाता है कि दूसरे लोग हैरत में पड़ जाते हैं लेकिन मुसलमानों की यह दोनों बुनियादी विशेषताएं उसे उस समय प्राप्त होती हैं जब वह तौहीद पर पूर्ण आस्था रखने के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुहब्बत और उनके निर्देशों पर अमल करने के पाबन्द हों। रसूल की मुहब्बत इस का बड़ा ज़रिया रहा है और हदीस शरीफ़ में इसका वर्णन ताकीद के साथ किया गया है।

तुममें से कोई व्यक्ति भी उस समय तक मोमिन (हक़ीक़ी मुस्लिम) नहीं हो सकता जब तक मैं उसको इतना प्रिय न हो जाऊँ जितना न उसके पिता, न उसका बेटा और दुन्या का कोई दूसरा व्यक्ति हो।'' अर्थात अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुसलमानों की मुहब्बत अपने बाप, बेटे और हर इंसान की मुहब्बत से अधिक हो। यह है वह दर्जा जो हक़ीक़ी सच्चे मुसलमान का बताया गया है।

मुसलमानों को जब अपने अन्तिम रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ऐसी बड़ी

और गहरी मुहब्बत होती है तो न तो उस को आपके बताए हुए अक़ीदे के अतिरिक्त कोई दूसरा अक़ीदा कुबूल होता है और न कोई ऐसा रस्मोरवाज या अमल जिसको हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मना किया हो या नापसन्द किया हो। जब उस को हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वास्तव में सबसे अधिक प्रेम होगा तो उसका दीन शुद्ध (खासिल) और उसका प्रभाव और उसकी फ़रमाबरदारी (आज्ञापालन) मुकम्मल होगी और यही वह प्रभाव और ताक़त है जो ज़माने के साथ कम होने के बावजूद आज तक मुसलमान के दीन को बाक़ी रखे हुए है। संसार के दूसरे धर्मों चाहे आस्मानी हों या ज़मीनी, सब ज़माने के प्रभाव से अपनी असल हालत से बहुत दूर हो चुके हैं लेकिन इस्लाम आज भी अपनी सही रूप रेखा में बाक़ी है। इसका दीनी रूप वही है जो उसके आखिरी नबी ने आज से चौदह सौ साल पूर्व बनाई और सिखाई थी। इसका असल कारण एक खुदा पर ईमान और अकीद–ए–रिसालत (रसूल पर पूरी आस्था) है जो इस्लाम को अपनी जगह से हटने नहीं देती और इसमें हमारी मदद हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ताबेदारी का सम्बन्ध व प्रेम और उनके कथन और आदेश पर अमल या अमल की इच्छा शक्ति करती है। हम को जब भी किसी धार्मिक मामले में या किसी दूसरे धर्म को देख कर किसी बात में सन्देह पैदा होता है या जानकारी की आवश्यकता होती है तो हम खुदा–ए–वाहिद की भेजी हुई किताब कुर्आन मजीद को, जिसको हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ले कर आए, सबसे पहले देखते हैं और जो उन्होंने फरमाया और बताया और खुद करके दिखाया और जो उनके सहाबा रज़ि0 ने उनकी तरफ़ से बताया या उनकी बात पेश की उसको देखते हैं और वहां से जवाब प्राप्त करते हैं। चुनांचे हम इस प्रकार भटकने से बच जाते हैं और सच्चे मार्ग पर चलते हैं लेकिन यह आज्ञापालन और सच्चे मार्ग की यह तलब और सच्चे दीन की यह फ़िक्र उसी समय काम करती है जब हम को अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुहब्बत और आज्ञापालन से सम्बन्ध हो और यह एहसास हो कि क़यामत में जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हम को देखेंगे तो सच्चे दीन की फ़िक्र और शरीअ़त का अनुपालन और सुन्नते नबवी सल्ल0 पर अमल के सिलसिले में हम ने दुन्यावी ज़िन्दगी में क्या किया उसको देख कर हमारे रवैये से खुश हो कर हमको अच्छी नज़र से देखेंगे या हमारे बुरे कर्मों को देख कर मुँह फेर लेंगे और कहेंगे ऐ पालनहार यह लोग हमारे नहीं हैं। उन्होंने हमारे तरीक़े को नहीं अपनाया था। उनको दुन्या के दूसरे लोगों और चीज़ों से अधिक प्रेम था लेकिन मुसलमान को जब सचमुच अपने नबी सल्ल0 से प्रेम होगा तो वह प्रेम उसको नबी सल्ल0 के आदेशों और उसकी लाई हुई शरीअ़त और दीन से हट कर कोई काम करने में आड़े आजाएगा और ध्यान दिलायेगा कि ऐ रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्यारे तुम क़यामत के दिन अपने नबी को क्या मुँह दिखाओगे और खुदा के हुजूर में तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क्या कह कर तुमको पेश करेंगे। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रेम करने

वालों का यह एहसास उसके दर्मियान और खुदा और रसूल सल्ल0 की नाफरमानी के दर्मियान एक आड़ बन कर आ जाता है जो उसको गलत और नाफरमानी के काम से रोक देता है।

आवश्यकता है कि हम अपना जाएजा लेते रहा करें कि जो लोग हमें प्रिय हैं या जिन चीज़ों को हम पसन्द करते हैं हुजूर सल्ल0 की मुहब्बत या लगाव से उनकी मुहब्बत या उनसे लगाव अधिक बढ़ा हुआ तो नहीं है कि वह हमको उस जीवन शैली से हटा दे जो हमको हमारे प्रिय नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताया है और क़यामत के रोज़ हम को उनके सामने शर्मिन्दा तथा संसार के पालनहार के सामने हमको मुजरिम बना कर खड़ा कर दे।

हमारे अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हमारी मुहब्बत आखिरत में सफलता दिलाने के साथ इस सांसारिक जीवन में मुसलमानों के दर्मियान एकता और भाईचारे की फ़िज़ा क़ायम करती है। और काले गोरे के अन्तर के बावजूद मुसलमान हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लाये हुए दीन व शरीअ़त को तस्लीम करने वाले हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रेम का यह सम्बन्ध मुसलमानों को आपस में जोड़ने वाली एक जबरदस्त शक्ति है जो उसको बुराईयों और गुमराहियों से बचाने वाला एक बड़ा साधन बन जाती है। यह एक महान वरदान है बल्कि मिल्लते इस्लामिया के ज़िन्दगी की पूँजी है इसकी सुरक्षा की हमेशा चिन्ता करना आवश्यक है लेकिन इसके लिए हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपना लगाव बढ़ाना और आप की बताई हुई ज़िन्दगी को अपनाने की फिक्र करना होगा। आपके पवित्र जीवन शैली और हालात को जानना होगा और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक खुदा पर ईमान लाने और उसके आदेशों का पालन और उसकी बन्दगी करने के लिए जो हिदायात दी हैं उन पर अमल करना होगा और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसके लिए जो तकलीफ़ें उठाईं मुसीबतें झेलीं और कुर्बानियां दीं, उनको देखना होगा और उनसे रोशनी हासिल करना होगा ताकि हम आख़िरत में अपनी सफलता और श्रेष्ठता का सामान कर सकें और अपने को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने क़यामत (हिसाब किताब) के दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उम्मती की हैसियत से पेश कर सकें। हर माहे रबीउल अव्वल की यह तारीखें जो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत और उनकी लाई हुई जीवन शैली को अपनाने की तलब पैदा करती हैं वह बाक़ी रहें, कमज़ोर न हों, तुम उसको भूल न जाओ और उसकी विशेषता के बाकी रखने से लापरवाह न हो जाओ। यही सन्देश हम को अल्लाह की किताब कुर्आन मजीद से मिलता है और यही पैग़ाम सीरत के जलसों से मिलता है और यही पैग़ाम हमको सीरत की किताबों और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों से मिलता है। अल्लाह तआला हमको सच्चे मार्ग पर चलने की क्षमता प्रदान करे जिसकी निर्भरता एक खुदा की बन्दगी और उसके आखिरी रसूल की ताबेदारी और उसकी मुहब्बत पर है।

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में

मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

दीन–ए इलाही और मुल्ला बदायूँनी:-

मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूँनी के लेखों का निचोड़ यह है:–

गुज़रात के शहर नौसारी से अग्निपूजकों का एक समूह आ गया तो उसने ज़रदुश्त के धर्म को सच्चा बताया, आग के पूजन को सबसे बड़ी इबादत बता कर बादशाह को अपनी तरफ़ झुकाने की कोशिश किया। कियानी बादशाहों की कहानियाँ सुनाते, बादशाह ने अबुल फ़ज़्ल को आदेश दिया कि गैर अरब बादशाह जिस तरह अपने अग्निकुण्ड को सदैव रोशन रखते थे। उसके महल में आग जलती रहे क्योंकि आग भी खुदा की निशानियों में से एक निशानी है और उसके प्रकाशों में से एक प्रकाश है। बादशाह अपनी जवानी के ज़माने से राजाओं की लड़कियों के कारण होम किया करता था जो आग की एक पूजा है, 25वें वर्ष जुलूस के नौरोज में बादशाह ने सूरज और आग का सजदा सार्वजनिक रूप से किया। दरबार के निकटवर्ती लोग भी चिराग जलने के समय खड़े होने लगे। सम्बला की आठवीं ईद के दिन बादशाह हिन्दुओं की तरह पेशानी पर तिलक लगाकर घर आया और जवाहरात की एक ड़ोरी ब्राह्मणों से अपने हाथ में बरकत के रूप में बँधवायी। दरबारियों ने अपनी–अपनी प्रतिष्ठा के अनुसार उस दिन जवाहरात और मोती उपहार में दिये, बादशाह ने राखी भी बँधवानी शुरु की। इस्लाम के विरुद्ध दूसरे धर्मों वाले जो रीतियाँ बयान करते, बादशाह उसको अन्तिम आदेश समझता और इस्लाम के सभी आदेशों को तर्कहीन घोषित करके मुसलमानों को ताने देता कि यह अरब के कुछ फसादियों और रहजनों के बनाए हुए हैं। धीरे–धीरे यह चीज़ इतनी बढ़ी कि इस्लाम को झूठा घोषित करने के लिए किसी तर्क की आवश्यकता नहीं रहती........।

इस्लामी विश्वासों और उसके गौड़ आदेशों पर सार्वजनिक रूप से संध्य किया जाने लगा तो अभागे हिन्दू और हिन्दू मिजाज रखने वाले मुसलमान पैगम्बरी की बुराई करने लगे। बुरे उलमा ने अपनी किताबों में नअत (नबी के लिए प्रशंसा गीत) के बजाए तबर्रा (बुरा–भला कहना) शुरु कर दिया। तौहीद (एकत्ववाद) के बाद बादशाही उपाधियाँ लिखने लगे। उनकी हिम्मत नहीं होती थी कि झूठों के मुकाबले में हजरत पैगम्बर (सल्ल०) का नाम भी लें इससे बड़ी बदनामी हुई। देश में फितना और फसाद फैलने लगा। इसके बावजूद जो लोग जनता में और विशेष लोगों में नीच और गिरी हुई प्रवृत्ति के थे। बादशाह के मुरीदों में सम्मिलित होकर उसके मुरीद होने लगे जिसमें लालच और डर को भी दखल होता था। जुबान पर सच्ची बात लाना असंभव हो गया................।

उसी ज़माने में एक माँग–पत्र तैयार किया गया, जिस पर मख़्दूमुल मुल्क शेख अब्दुल नबी सदरुस्सुदूर, क़ाज़ीउल क़ुज़ात, जलालुद्दीन मुल्तानी सदर जहाँ, मुफ़्ती कुल, आलमुल उलमा, उलमा–ए–जमाँ, शेख मुबारक, गाजी खाँ बदखशी, जो तर्कशास्त्र में अद्वितीय थे, हस्ताक्षर और मुहर थी, इसमें शरीअत के मुज्तहिद पर न्यायप्रिय इमाम

की वरीयता सिद्ध की गयी थी। न्यायप्रिय इमाम को इस बात का अधिकार दिया गया कि वह नैतिक मामलों में किसी रिवायत को दूसरी रिवायतों पर वरीयता देकर उसके अनुसार निर्णय दे सकता है, ताकि उससे किसी को इन्कार की मजाल न हो, और यदि ऐसा करे तो आरोपी बन जाए, इस माँगपत्र पर बहुत लम्बी बहस हुई, विषय यह था कि इज्तेहाद और मुज्तहिद किसको कहते हैं और ऐसे न्यायप्रिय इमाम को जो देश के मामलों में दक्षता रखता हो और मुज्तहिदों से ऊँचा स्थान रखता हो, इस बात का अधिकार प्राप्त है या नहीं, कि वह समय के अनुसार नैतिक मामलों में अपना निर्णय लागू कर दे। इस माँग–पत्र पर कुछ ने तो खुशी–खुशी और कुछ ने मजबूरी में अपनी मुहर लगा दी।

माँग–पत्र यह है:–

इस भूमिका और व्याख्या का निचोड़ यह है कि हिन्दुस्तान जैसा व्यापक देश, सुल्तान की न्यायप्रियता और उनके प्रशासन के प्रशिक्षण न्याय और उपकार का केन्द्र बन चुका है। विशेष लोग और साधारणजन, विशेष रूप से सच्चाई का ज्ञान रखने वाले उलमा और गहन जानकारी रखने वाले विद्वानों, जो कि मुक्ति के मार्गदर्शक और ज्ञान वालों के दर्जों के राही हैं, अरब और गैर अरब देशों से आकर इस देश में घुल–मिल चुके हैं, तो ऐसे सभी उलमा जो गौड़ और मूल विद्याओं के विद्वान और तर्क और परम्परा पर विशेष दक्षता रखते हैं, ईमानदारी से और सोच–विचार के बाद यह फैसला करते हैं कि इस प्रतिष्ठित आयत को ध्यान में रखते हुए कि ''अल्लाह का आज्ञापालन करो और रसूल का आज्ञापालन करो। और अपने लोगों में से अधिकारियों का आज्ञापालन करो।'' इस हदीस की रोशनी में कि ''अल्लाह की दृष्टि क़यामत के दिन मनुष्यों में से सबसे पसन्दीदा न्यायप्रिय इमाम होगा तो जिसने अमीर का आज्ञापालन किया, उसने मेरा आज्ञापालन किया और जिसने अमीर की अवज्ञा की उसने मेरी अवज्ञा की, आदि।'' बुद्धि विवेक और परम्परा के विरुद्ध दलीलों और साक्ष्यों के आधार पर यह आदेश दिया गया कि न्यायप्रिय बादशाह का स्थान अल्लाह की दृष्टि में मुजतहिद के स्थान से बढ़कर है। हजरत सुल्तानुल इस्लाम, कहफुल अनाम, अमीरूल मोमिनीन, जिल्लुल्लाह अलल आलमीन अबुल फतह जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह गाजी, अल्लाह इनकी बादशाहत को सदैव जारी रखे, बहुत ही न्यायप्रिय हैं, बहुत ही बुद्धिमान हैं और बहुत ही अल्लाह से डरने वाले हैं, इसलिए यदि धर्म की इन समस्याओं में जो इज्तेहाद करने वालों की दृष्टि में विवादित हों तो अपनी बुद्धि और विचार से किसी भी एक स्थिति को चुनकर जनता की सुविधा और देश की व्यवस्था के हितों के लिए आदेश जारी करें तो यह सर्वसम्मति का आदेश समझा जाएगा और उसका पालन सारी प्रजा पर अनिवार्य और अन्तिम होगा। इसी तरह यदि वह ऐसा आदेश जारी करें जो जनता के लिए सुविधा का कारण हो, कुरआन की आयतों के विरुद्ध न हो तो उस पर इसका पालन करना प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य और अन्तिम होगा। उसका विरोध परलोक की यातना और घाटे और धार्मिक और सांसारिक घाटे का कारण होगा। यह पंक्तियाँ अल्लाह और इस्लाम के अधिकारों के जारी करने के लिए दीन के उलमा और मुज्तहिद फकीहों के समर्थन से रजब के महीने में 987 हि0 में लिखी गई।

इस माँग–पत्र का मसौदा शेख मुबारक के हाथ से लिखा गया, अन्य उलमा ने उसको मजबूरी में लिखा, शेख मुबारक

शेष पृष्ठ ..38.....पर

संदूक़

नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

एक आदमी के पास एक सन्दूक़ था उसकी वह बड़े लगन से देखभाल करता। उसने ऐसा हिसाब किताब बनाया था कि कोई उस कमरे में नहीं जा सकता था जब कभी सन्दूक़ खोलने जाता तो जितने भी नौकर चाकर होते उन्हें उस कमरे से हटा देता।

पता है कि नौकर चाकर बड़े विचित्र प्राणी होते हैं, जब उन्हें कोई बात खटकती है तो उसका जवाब लेने के लिए टोह में लग जाते हैं। जब उन्होंने देखा कि हमारा मालिक सन्दूक के पास किसी को फटकने नहीं देता तो आपस में खुसुर–फुसुर शुरु कर दी और ये बात एक दिन शोर बनकर पूरे शहर में फैल गई कि फलाँ आदमी के पास ऐसा कीमती सन्दूक़ है जिसकी वह जी जान से हिफाज़त करता है और किसी को वहां फटकने भी नहीं देता।

ये सन्दूक़ वाला आदमी प्रशासन में बड़ी पहुंच रखता था। बादशाह के दरबार में उसकी बड़ी मान जान थी। बादशाह अनेकों मामलों में दरबारियों से राय लेता और उनकी सुनता मगर इसकी राय को बहुत पसन्द करता। बस यहीं से दिक़्क़त शुरु हुई। कई दरबारी उससे जलने लगे और उनके पास सन्दूक़ वाली खबर आई तो बादशाह के कान भरने का उन्हें अच्छा अवसर मिला। उन्होंने बादशाह से कहा कि जिसको आप इतना मान देते हैं, खुफिया जानकारी शेयर करते हैं, उसकी हर राय मानते हैं, उसके पास एक ऐसा सन्दूक़ है जो किसी को नहीं दिखाता।

ज़माना बदलता रहता है, लोग बदलते रहते हैं मगर विशेष प्रवृत्ति के लोग नहीं बदलते। आशय राजसिंहासन के इर्द गिर्द चक्कर लगाने वाले से है। वह इतने लचकदार हैं कि कोई भी सरकार आये जाये उन्हें फर्क़ नहीं पड़ता, हर विचारधारा की सरकार में उनकी पैठ बन जाएगी वह इसीलिए एक दूसरे से बड़े चौकन्ने रहते हैं कि कहीं सारा जुगाड़ हाथ से न चला जाए।

बहरहाल चापलूस दरबारियों ने बादशाह के कान इतने दिन भरे कि एक दिन वह उन लोगों की बातों में आ ही गया। उसको भी उस सन्दूक़ के बारे में जिज्ञासा पैदा हुई कि आखिर उस सन्दूक़ में ऐसी क्या चीज़ है जो वह मुझसे भी छुपा रहा है।

आखिरकार बादशाह ने एक दिन भरे दरबार में उसे आदेश दिया कि तुम यहीं ठहरो और सन्दूक़ मंगाओ। भरे दरबार में सन्दूक़ लाया गया। सन्दूक़ के मालिक ने बड़े हाथ पाँव जोड़े कि हुजूर इसे मत खोलिये मगर बादशाह के इतने कान भरे गये थे कि उसे लगने लगा था कि इसमें कोई संवेदनशील वस्तु है जो राज सत्ता के लिए हानिकारक हो सकती है।

ख़ैर! सन्दूक खोला गया तो उसमें केवल फटे–पुराने कपड़े के एक जोड़े के अलावा कुछ भी न था। जलने और कान भरने वाले दरबारियों के होश उड़ गये, इधर बादशाह भी लज्जित था कि मैंने ये क्या कर दिया। फिर सन्दूक़ के मालिक से पूछा, आखिर ये माजरा क्या है?

सन्दूक के मालिक ने कहा, हुज़ूर जब आपने मुझ गुलाम को खरीदा था तो मैं इसी कपड़े में था, आज आपके ज़रिये अल्लाह ने मुझे बहुत इज़्ज़त दी है तो मैं कभी कभी अकेले में कपड़ा निकाल कर पहन लेता हूँ और आइने में अपने को सम्बोधित करके कहता हूँ अयाज तू अपनी पिछली हैसियत को भूल न जाना।

इतिहास की किताबों में है कि ये मशहूर गुलाम अयाज था और बादशाह महमूद गजनवी था सच है कि आदमी को अपनी पुरानी औक़ात नहीं भूलनी चाहिए, होशियार आदमी वह है जो अमीरी–ग़रीबी और परेशानी व खुशहाली में अपने रब को याद करके अपने बन्दे होने का एहसास लिये जीता रहे और लोगों के साथ भलाई करता रहे।

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

अच्छे व्यवहार की शिक्षा

मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी

मुहताजों के साथ अच्छा व्यवहारः–

अनाथों के साथ मुहताजों का भी उल्लेख किया गया है। मुहताज से अभिप्राय समाज के उन लोगों से है जो शारीरिक असमर्थता और आर्थिक परेशानियों के कारण अपनी बुनियादी आवश्यकता पूरी करने में असमर्थ हैं। शारीरिक असमर्थता भी आर्थिक दौड़–धूप में बाधक बनती है और धन का अभाव भी। इस्लाम चाहता है कि इस बाधा को दूर किया जाए और जो लोग आर्थिक परेशानियों में घिरे हुए हों उनकी हर संभव सहायता की जाए, ताकि उनकी आवश्यकताएं पूरी हों और उन्हें आर्थिक स्थिरता प्राप्त हो। कुरआन और हदीस में दरिन्दों और मुहताजों के साथ अच्छे व्यवहार और उनके नैतिक तथा कानूनी अधिकारों का बार–बार उल्लेख किया गया है। एक स्थान पर आदेश हैः–

''तो नातेदार को उसका हक दो, और मुहताज और (जरूरतमंद) मुसाफिर को (उसका हक), यह उत्तम है उनके लिए जो अल्लाह की खुशी चाहते हैं और वही कामयाब होने वाले हैं।'' (30:38)

मुहताज प्रायः भीख मांगने वाले को कहा जाता है। भीख माँगना लाचारी और दरिद्रता का लक्षण नहीं है। जिन लोगों की यह बुरी आदत बन जाती है वह बिना किसी लाचारी के भी भीख मांगते हैं। उन्हें मुहताज नहीं, मुहताजों जैसे रूपवाला कहना चाहिए। इसके विपरीत कुछ लोग अधिक ज़रूरतमंद होते हैं, लेकिन उनका स्वाभिमान और आत्मसम्मान उन्हें इस बात की अनुमति नहीं देता कि वे किसी के सामने हाथ फैलाएं। कुरआन की शिक्षा यह है कि इस प्रकार के वास्तविक ज़रूरतमंदों को देखा जाए। विशेष रूप से उन लोगों को जो दीन (धर्म) की सेवा में लग जाने के कारण आर्थिक दौड़–धूप नहीं कर सकते। उनके विषय में कुरआन में है।

''उनके स्वाभिमान के कारण बेखबर उन्हें धनवान समझता है। तुम उनके चेहरों से उनको पहचान सकते हो। वे लोगों से चिमट–चिमटकर नहीं मांगते।'' (22:73)

इस आयत की व्याख्या हजरत अबू हुरैरा की एक रिवायत से होती है। वे कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने फरमायाः–

''मुहताज वह नहीं है जो लोगों के सामने हाथ फैलाये मांगता फिरे, जिसे तुम दो–एक निवाले (या खाने की कोई चीज) या एक–दो छुहारे दे देते हो, बल्कि मुहताज तो वह है जो बुनियादी आवश्यकताओं की सामग्री न होने के बावजूद इस प्रकार रहता है कि उसकी हालत का पता नहीं चलता कि उसे सदका या दान दिया जाए, और न ही वह खड़ा होकर किसी से मांगता है।''

(बुखारी, मुस्लिम)

इस प्रकार समाज के उन शरीफ और सम्मानित व्यक्तियों की सहायता की ओर ध्यान दिलाया गया है जिनकी आर्थिक परेशानियों की जानकारी बड़ी मुश्किल से ही होती है और जो सबसे अधिक सहायता के अधिकारी होते हैं।

पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यवहारः–

कुरआन की सूरा निसा की आयत 36 में पड़ोसियों की सेवा और उनके साथ अच्छा व्यवहार करने की हिदायत इस प्रकार दी गयी हैः–

''नातेदार पड़ोसियों, अजनबी पड़ोसियों और पास बैठने वालों के साथ अच्छा व्यवहार करो।'' (4:36)

इन्सान जिन लोगों के बीच रहता है और जो उसके पड़ोसी हैं और जिनसे वह अपने सामाजिक और आर्थिक जीवन में अलग—थलग नहीं रह सकता उनके अधिकार, स्पष्ट है कि उन लोगों से अधिक हैं जिनसे उसका इस प्रकार का संबंध नहीं होता। यहां पड़ोसियों के तीन प्रकार बताये गये हैं। एक वह जो पड़ोसी होने के साथ नातेदार भी हैं, दूसरा वह जो केवल पड़ोसी है और तीसरा वह जिसका संयोग से या कभी—कभी साथ हो जाता है जैसे यात्रा में, कार्यालय में, स्कूल और कॉलेज में, कारखाना और फैक्ट्री में, व्यापार और कारोबार में। जिन लोगों के साथ इस प्रकार का साथ हो वे भी एक प्रकार के ''पड़ोसी'' हैं। पड़ोसियों के साथ अच्छे व्यवहार का महत्व संसार के समस्त धर्मों ने बताया है। परन्तु इस्लाम ने पड़ोसियों के साथ सद्व्यवहार ही की शिक्षा नहीं दी, बल्कि पड़ोसी होने का इतना व्यापक विचार दिया कि संसार में इसका कोई उदाहरण नहीं मिलता। उसने कहा कि इन्सान के साथ किसी भी प्रकार का थोड़ी—बहुत देर के लिए भी साथ हो जाए तो उसका हक कायम हो जाता है। यदि यह संपर्क स्थायी हो तो उसका हक भी बहुत अधिक बढ़ जाता है।

हज़रत आइशा (रज़ि0) और हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि0) दोनों से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने फरमायाः—

''जिबरील (अलै0) मुझे पड़ोसी के साथ अच्छे व्यवहार की इतनी ताकीद करते थे कि मैं सोचने लगा कि वे उत्तराधिकार (विरासत) में उसे भागीदार बना देंगे।''

(बुखारी, मुस्लिम)

इस्लाम केवल इतना ही नहीं चाहता कि पड़ोसी को किसी प्रकार का कष्ट न पहुंचे, बल्कि वह यह भी चाहता है कि उसकी आर्थिक, नैतिक, हर प्रकार की सहायता की जाए और उसके साथ अत्यंत शालीनता का व्यवहार अपनाया जाए ताकि समाज का हर व्यक्ति इस विश्वास और इत्मीनान के साथ जीवन बिताये कि वह शुभचिंतक लोगों के बीच रह रहा है, जिनसे उसे कभी कोई कष्ट नहीं पहुंचेगा, वे किसी भी आड़े समय में उसकी सहायता के लिए दौड़ पड़ेंगे और उसके दुख—दर्द में भाइयों की भांति काम आएंगे। इस मामले में इस्लाम की शिक्षाओं की महत्ता का अनुमान निम्नलिखित दो हदीसों से हो सकता हैः—

अबू सईद खुजाई (रज़ि०) कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने तीन बार फरमायाः— ''खुदा की कसम! वह व्यक्ति मोमिन नहीं। खुदा की कसम। वह व्यक्ति मोमिन नहीं। खुदा की कसम! वह व्यक्ति मोमिन नहीं।'' पूछा गया कौन? आप (सल्ल०) ने फरमायाः— ''वह व्यक्ति जिसके कष्टदायक कामों से उसका पड़ोसी सुरक्षित न हो।'' (बुखारी, मुस्लिम)

इस हदीस में पड़ोसी को कष्ट पहुंचाने और दुख देने को ईमान के विरुद्ध ठहराया गया है। एक अन्य हदीस में हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रजि) कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को फरमाते सुनाः—

''वह व्यक्ति मोमिन नहीं है जो स्वयं तो पेट भरकर खाये और उसका पड़ोसी उसके निकट ही भूखा पड़ा रहे।''

(मिश्कात, बैहकी)

इससे पता चलता है कि ईमान की पहचान ही यह है कि आदमी का पड़ोसी उसकी वजह से शांति का अनुभव करे और वह उसके दुख—दर्द और कठिनाइयों में काम आये।

❖❖❖

जै़तून की वादी में भूख का विलाप

मुहम्मद नफीस खान नदवी

गज़्ज़ाः वह धरती, जहाँ कभी जैतून के पेड़ लहलहाते थे, जहाँ समुंदर की हवाएँ अमन के गीत सुनाती थीं, आज वही गज़्ज़ा इंसानी जमीर की सबसे बड़ी कसौटी बन चुका है। यहाँ गोलियों से भी तेज भूख है, बमों से भी डरावनी प्यास है, पानी से सस्ता बहता लहू है, और आटे की बोरियों से भी ज़्यादा बिखरी हुई लाशें हैं! यह मौत और तबाही का वह मंजर है जिसे आधुनिक दुनिया ''जंग'' का नाम देकर नज़रअंदाज कर रही है, मगर हक़ीक़त में यह एक संगठित नस्लकुशी है।

जब मासूम बच्चों के जिस्म भूख से सूखे पत्तों की तरह काँपने लगें, जब निवाले के लिए लगी कतारों पर बारूद बरसाया जाए, जब जिंदगी बाँटने वाले राहत के काफिले भी मौत का निशाना बनें, जब पानी के कुछ क़तरों के लिए नन्हीं कलियाँ ऐड़ियाँ रगड़ते–रगड़ते खामोश हो जाएँ और जब आँखों के कुएँ भी सूखकर वीरान हो जाएँ तो यह जंग, जंग नहीं रहती यह इंसानियत की बेइज़्ज़ती और जुल्म–बरबरियत की वह सबसे बुरी मिसाल बन जाती है जो इतिहास के माथे पर स्याह धब्बा बनकर हमेशा याद रखी जाएगी।

गज़्ज़ा की फिजाओं में सिर्फ बारूद का धुआँ नहीं है, भूख का अजाब भी इंसानियत का गला घोंट रहा है।

गज़्ज़ा की गलियों में मौत हजार चेहरों के साथ उतरती है कभी राहत ट्रक के पास एक गोली जिंदगी छीन लेती है, कभी रोटी का एक टुकड़ा किसी हाथ में आता है और वहीं मौत घट जाती है, कभी एक मासूम बच्चा खाने के पैकेट की तरफ लपकता है और अगले लम्हे उसका जिस्म टुकड़ों में बिखर जाता है। कोई भीड़ में रौंदा जाता है, तो कोई बूढ़ा इतना लंबा इंतजार करता है कि निवाला मुँह तक आने से पहले ही उसकी रूह निकल जाती है।

भूख सिर्फ कमी का नाम नहीं, यह इंसान की जान, उसका सम्मान और उम्मीद सबको निगल जाने वाला अजाब है। यह जिस्म को जकड़ती है और रूह तक को थका देती है। जेहन अंधेरों में धँस जाता है, नींद गायब, होश डगमगाने लगते हैं और कभी वहम, कभी डर, कभी चीखें–सब भूख के जुर्म की निशानियाँ हैं।

गज़्ज़ा की 80% आबादी भुखमरी के कगार पर है। हज़ारों बच्चे खाद्य–संकट का शिकार हैं और रोज दर्जनों जानें रोटी–पानी न मिलने से चली जाती हैं। अंतर्राष्ट्रीय रिपोर्टें बताती हैं कि पाँच साल से कम उम्र के लगभग 95% बच्चे भुखमरी और कुपोषण से जूझ रहे हैं। अस्पतालों में ऐसे बच्चे लाए जाते हैं जिनमें रोने तक की ताक़त नहीं। एक विदेशी पत्रकार ने लिखाः ''गज़्ज़ा'' के शिविरों में ऐसे बच्चे हैं जिनकी आँखें ख़ाली घड़ों जैसी हैं– न आँसू, न आवाज़, बस ख़ामोशी।"

यह इत्तेफाक़ नहीं बल्कि सोची–समझी नीति है। इसराइल खुलेआम कह चुका है कि ''गज़्ज़ा'' में बिजली नहीं दी जाएगी, न पानी और न ही रोटी की आपूर्ति। यानी भूख को युद्ध का औजार घोषित कर दिया गया है।

लेकिन इससे बढ़कर दर्दनाक पहलू यह है कि मुस्लिम और अरब देश भी खामोशी से तमाशा देख रहे हैं। अरबों– ख़जानों और तेल के समुद्र में डूबे मुल्क भी कुछ बोरी आटा और दवाइयाँ अपने भाईयों तक न पहुँचा सके। यह चुप्पी तलवार और बारूद से भी भयावह है।

यह सवाल इतिहास पूछेगा –जब ''गज़्ज़ा'' के बच्चे भूख–प्यास से तड़प रहे थे, औरतें मलबों में दबी थीं, बूढ़े कतारों में मर रहे थे–तो अरब की हुकूमतें क्यों खामोश रहीं? यह इस्लामी इतिहास का सबसे शर्मनाक अध्याय है।

❖❖❖

वमा अरसलनाक इल्ला रहमतल लिल आलमीन

(और हम ने तुम को सारी सृष्टियों के लिए रहमत बना कर भेजा है)

इं0 जावेद इक़बाल

लगभग 1460 वर्ष पहले जब पूरी इंसानी दुनिया अंधकार में डूबी हुई थी शैतानी ताकतों ने चारों ओर से इन्सानियत को अपने ख़ूनी पंजों में जकड़ लिया था, मानवता कराह रही थी, तड़प रही थी। लड़कियों को ज़िंदा ही ज़मीन में गाड़ा जा रहा था, महिलाओं का कोई आदर सम्मान न था, उन्हें बाज़ार में बिकने की एक चीज भर समझा जाता था, कहीं जुए में उन्हें दांव पर लगा दिया जाता था, तो कहीं जिंदा जला दिया जाता था। इतना ही नहीं दास प्रथा भी हर जगह आम थी, गुलामों और सेवकों के साथ जानवरों से भी बदतर व्यवहार किया जाता था। हत्या और बलात्कार शहजोरों का जैसे अधिकार था।

उस समय खालिके कायनात (सृष्टि के रचयिता) ने अपने आखिरी रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को मानवता की रक्षा और इंसानियत की कदरों की हिफाजत के लिए, यानी पूरी दुनिया पर रहमत बरसाने के लिए भेजा।

रहमत अल्लाह ताला की महत्वपूर्ण और सब से पहली सिफत (गुण) है। मगर अल्लाह ने अपनी यह सिफत हजरत मुहम्मद सल्ल0 को भी भरपूर तरीके से अता कर दी, और फरमा दिया कि ऐ मुहम्मद हमने तुम को तमाम जहानों के लिए रहमत बना कर भेजा है। मुहम्मद सल्ल0 किसी एक इलाके या किसी एक कौम के रसूल नहीं हैं और न ही वह किसी मख़सूस जमाने तक सीमित हैं। मुहम्मद सल्ल0 की तालीमात पूरी दुनिया के इंसानों, हैवानों, जमादात व नबातात सब के लिए हैं और रहती दुनिया तक के लिए हैं। इंसान अगर मुहम्मद सल्ल0 के जरिए फैलाई हुई इल्म की रौशनी से फायदा उठाएगा तो केवल उसको ही नहीं बल्कि पशु पक्षी, पेड़ पौधे, दरिया और पहाड़ सभी को लाभ होगा और नतीजे में खुद इंसान ही दुनिया की हर चीज़ से लाभान्वित (मुस्तफीद) होगा।

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने ज़िन्दगी भर अपने स्वार्थ के लिए कोई काम नहीं किया, उन्होंने तो कभी पेट भर भोजन भी नहीं किया। कई—कई दिन के फाके के बाद कुछ खाने को मिला तो पहले अपने साथियों को खिलाया। अगर वह चाहते तो अल्लाह उनके लिए पहाड़ों को सोना बना देता मगर उन्होंने दुनिया के गरीबों मिस्कीनों का साथ पसंद किया, उन्होंने पूंजी पतियों के समूह में शामिल होना पल भर के लिए भी पसंद नहीं किया।

आदर व सम्मान की पात्र, हम सब की मां समान हजरत आयशा फरमाती हैं कि मुहम्मद सल्ल0 ने कभी पेट भर कर नहीं खाया और कभी किसी के सामने फाके का इजहार नहीं किया। खाली हाथ रहना हज़रत को धनी होने से ज़्यादा पसंद था। कभी कभी ऐसा भी होता कि भूख के कारण रात भर नींद न आती मगर फिर भी अगले दिन रोजा रखते। हज़रत आयशा रज़ि0 कहती हैं कि मैं हजरत के फाके की हालत को देखकर रो पड़ती और कहती, वारी जाऊं, दुनिया में रहते हुए इतना तो कुबूल कर लीजिए जिस से जिस्म की ताकत बनी रहे, तो हजरत जवाब देते, आयशा मुझे दुनिया से क्या काम, मेरे पिछले जमाने के भाई (यानी रसूल) जो हिम्मत और जोश के नमूना थे इस से भी ज़्यादा सख़्त हालात में सब्र से काम लेते थे। वे इसी तरीक़े पर चलते हुए खुदा के पास लौट गए। खुदा ने उनको इज़्ज़त दी और पूरा पूरा बदला दिया। अगर मैं ने खुशहाल ज़िन्दगी गुजारी तो मुझे शर्म आती है कहीं उनसे पीछे न रह जाऊं, देखो मेरे लिए महबूब यह है कि मैं अपने उन भाइयों से जा मिलूं। हज़रत आयशा फरमाती हैं कि इस बात चीत के बाद केवल एक महीना ही आप सल्ल0 इस दुनिया में रहे

और फिर अपने रब से जा मिले।

रहमत का दूसरा नमूना देखने के लिए हज़रत अनस रज़ि0 का बयान किया हुआ वह वाकया भी गौर करने लायक है जब एक देहाती गंवार शख़्स हज़रत के पास आया और आप सल्ल0 की चादर को पकड़ कर जोर से खींचा, चादर का किनारा हज़रत की गरदन में चुभ गया और निशान पड़ गया। वह गंवार बदतमीजी से बोला, ''मुहम्मद मेरे यह दो ऊँट हैं मुझे इतना माल दो कि मैं इन पर लाद कर ले जाऊं क्योंकि तेरे पास जो माल है वह न तेरा है न तेरे बाप का'' यह सुनकर हज़रत मुहम्मद सल्ल0 अवाक अवस्था में चुप के चुप रह गए, कुछ देर बाद बोले, माल तो अल्लाह का है और मैं उसका बन्दा हूं। फिर पूछा तुम ने मेरे साथ जो व्यवहार किया उस पर तुम डरे नहीं? उस देहाती ने कहा ''नहीं'' पूछा क्यों? वह बोला मुझे मालूम है कि तुम बुराई का बदला बुराई से नहीं दिया करते। यह सुनकर हज़रत हँस दिये और हुक्म दिया कि एक ऊँट पर जौ और दूसरे पर खजूरें लाद दो।

आप सल्ल0 से ताल्लुक रखने वाली ऐसी अनेक घटनाएं हैं। एक बार एक यहूदी जैद बिन सअनरू ने आप सल्ल0 से अपने कर्ज का मुतालबा बड़ी बदतमीजी से चादर घसीट कर और कुर्ता पकड़ कर किया, हज़रत उमर रज़ि0 साथ थे उन्होंने यहूदी को सख्ती से बात करने को मना किया, रसूले खुदा हजरत मुहम्मद सल्ल0 ने मुस्कुराते हुए हज़रत उमर को टोका, बोले उमर तुम्हें इस से नरमी से पेश आना चाहिए था, तुम मुझ से कहते कि इसका कर्ज अदा करो और इसे समझाते कि बात अच्छे शब्दों में करनी चाहिए। फिर यहूदी से कहा अभी तो कर्ज अदा करने की मीआद में तीन दिन बाकी हैं (अभी से गुस्सा क्यों करते हो)। फिर हज़रत उमर से कहा जाओ इसका कर्ज अदा कर दो और 20 साअ (तोला) ज़्यादा देना क्योंकि तुम ने उसे डाँटा था।

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने सभी के साथ व्यवहार कुशल रहने की नसीहतें की हैं, माँ—बाप के साथ भला व्यवहार करने और उनकी सेवा करने की शिक्षा तो सभी देते हैं मगर आप सल्ल0 ने पत्नियों के साथ, सेवकों के साथ, पड़ोसियों के साथ और पशु—पक्षियों के साथ भी भला व्यवहार करने की हिदायतें दी हैं।

पत्नियों के विषय में आप सल्ल0 ने फरमाया लोगो अपनी बीवियों के साथ भला व्यवहार करो, मुसलमानों में उस आदमी का ईमान ज़्यादा कामिल है जिसका व्यवहार आम तौर पर ज़्यादा अच्छा हो, खासकर बीवियों के साथ मुहब्बत भरा हो।

आम तौर पर बेटियों के पैदा होने पर लोग खुशी का एहसास नहीं करते, कुछ तो आज भी बेटियों की पैदाइश का जिम्मेदार बीवियों को समझते हैं जिसके कारण उन पर जुल्म करने लगते हैं, कभी कभी तो उस जमाने में और आज भी बेटियों की जान ही कुछ जालिम ले लेते हैं। रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया कि जिस किसी के यहाँ लड़की पैदा हो और वह न तो उसे कोई तक़लीफ होने दे, न उसे जलील करे, न लड़कों के मुकाबले उसकी मुहब्बत में कमी करे तो अल्लाह तआला उसे जन्नत में जगह देंगे।

उस ज़माने की दुनिया में सभी जगह गुलाम प्रथा आम बात थी और उन पर बड़े जुल्म किए जाते थे, (गुलाम प्रथा दुनिया में है तो आज भी मगर थोड़ा सा उसका रूप बदला हुआ है) रसूलुल्लाह सल्ल0 ने गुलामों को आजाद करने और उन पर जुल्म न करने के लिए तरह तरह के प्रोत्साहन दिए, उन के साथ भाइयों जैसे सुलूक करने की हिदायतें दीं। फरमाया, खाना और कपड़ा गुलाम का हक है और यह भी उसका हक है कि उस से ऐसा कठोर काम न लिया जाए जो उसके बस से बाहर हो। एक दूसरे मौके पर फरमाया कि ये बेचारे भी तुम्हारे भाई हैं, अल्लाह ने इन्हें तुम्हारे ताबेअ (अधीन) कर दिया है, तो समझ लो, तुम्हें चाहिए कि उसे वही खिलाओ जो खुद खाओ और उसे वही पहनाओ जो खुद पहनो और उस से इतना भारी काम न लो जो वह न कर सकता हो और अगर ऐसा काम आ पड़े तो खुद भी उसकी मदद करो।

पड़ोसियों के साथ बिना किसी भेद भाव के भला व्यवहार

करने के लिए भी खास हिदायतें दी हैं। आप सल्ल0 ने एक अवसर पर तीन बार फरमाया ''खुदा की क़सम वह मोमिन नहीं है''।

''खुदा की कसम वह मोमिन नहीं है''।

''खुदा की कसम वह मोमिन नहीं है''

लोगों ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल कौन मोमिन नहीं है? आप सल्ल0 ने कहा ''वह व्यक्ति जिसके पड़ोसी उसके झगड़ों टंटों से परेशान रहते हों। एक दूसरे मौके पर फरमाया जो शख़्स अल्लाह पर और आखरित पर ईमान रखता हो तो उस के लिए ज़रूरी है कि अपने पड़ोसियों को न सताए।

जानवरों के बारे में हज़रत जाबिर रज़ि0 कहते हैं कि एक बार अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्ल0 की नज़र एक गधे पर पड़ी जिसके मुँह को दाग कर कोई निशान बनाया गया था, उसे देख कर आप सल्ल0 ने फरमाया ''वह आदमी अल्लाह की रहमत से दूर है जिसने बेरहमी का यह काम किया''।

पिछले ज़माने की एक औरत का हाल सुनाते हुए फरमाया कि उसने एक बिल्ली पाली, उसे बांध कर रखा और उसके खाने पीने का कोई ख्याल न रखा, भूख प्यास से वह बिल्ली मर गई, इस जुल्म के नतीजे में उस औरत को अल्लाह तआला ने दोजख की सजा दी। एक दूसरी औरत, जो थी तो फाहिशा, बद किरदार, गुनाहगार, मगर उसने एक प्यासे कुत्ते को पानी पिलाया, वह भी इस जोखिम से कि उसे कुएं में उतरना पड़ा था और अपने चमड़े के मोजे में पानी भर कर लाई थी, अल्लाह तआला ने उसे बख़्श दिया।

जंग की हालत में आम तौर पर विजेता फौजें, पराजित हारी हुई क़ौम की महिलाओं को अपमानित करती हैं, दुर्वयवहार करती हैं, बूढ़ों बच्चों का ख्याल किए बिना खुले आम नरसंहार करती हैं, खेतों और बागों को उजाड़ती हैं। वर्तमान में हम देख ही रहे हैं कि इस्राईल की जालिम हुकूमत ने गज़्ज़ा में कैसी तबाही मचाई है। रसूलुल्लाह सल्ल0 ने जंग की हालत में भी जुल्म से बचने की हिदायतें दी हैं।

आप सल्ल0 ने एक जंग के मौके पर आदेश दिया कि किसी बूढ़े को क़त्ल न करना और न किसी बच्चे को और न किसी महिला को। जो माल हाथ लगे उस में खयानत न करना, नेकी और एहसान करते रहना। याद रखो अल्लाह को याद रखो अल्लाह एहसान करने वालों को पसंद करता है।

जंग के दौरान जो कैदी पकड़े जाते हैं उनके बारे में भी उदारता के साथ पेश आने की हिदायतें रसूलुल्लाह सल्ल0 ने दी हैं यही वजह है कि एक जंग में पकड़े गए कैदी अबू अजीज ने स्वयं बताया कि वे लोग जब मेरे लिए खाना लाते तो रोटी मुझे खिलाते और खुद केवल खजूर खा कर रह जाते। जिन कैदियों के पास कपड़े नहीं थे, रसूलुल्लाह सल्ल0 ने उन्हें कपड़े भी दिलवाए।

इतना ही नहीं बल्कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने लोगों को खाना खाने और पानी पीने का सलीका भी सिखाया, महफिल में बैठने, लेटने और सोने के तरीक़े भी सिखाए हैं।

रसूलुल्लाह सल्ल0 के दुनिया पर इतने एहसान हैं कि छोटे से एक लेख में उनको समेटना संभव नहीं है। 14–15 सौ साल पहले की दुनिया जिस तरह के अंधकार में डूबी हुई थी, आज फिर उसी जैसे अंधकार में फंसी हुई है। ज़रूरत है कि आज के ज़माने में एक बार फिर रसूलुल्लाह सल्ल0 की तालीमात को पूरे यकीन, एतमाद और ताक़त के साथ दुनिया के मजलूमों–मजबूरों के सामने रखा जाये। मगर इस चैलेंज भरे काम में कामयाबी तभी मिलेगी जब इसका बीड़ा उठाने वाले खुद को रसूलुल्लाह सल्ल0 के साँचे में कम से कम 20 फीसद तो ढाल ही लें।

वे दूसरों के हकूक अदा करने वाले बन जायें, इंसाफ के लिए खड़े होने वाले बन जायें, ईमानदारी से कारोबार करने वाले बन जायें, पड़ोसियों के साथ अमन व अमान से रहने वाले बन जायें, वगैरह वगैरह।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

इस्लामी अक़ीदे और ईमानियात से संबंधित प्रश्नों के उत्तर

प्रश्नः इस्लाम के माने क्या हैं? और दीने—इस्लाम से क्या मुराद है?

उत्तरः इस्लाम के माने इताअत और फरमाबरदारी के हैं और दीने—इस्लाम से मुराद अल्लाह तआला की इताअत और उसके अहकाम की पैरवी है।

प्रश्नः इस्लाम की बुनियाद किन पाँच चीजों पर है?

उत्तरः (1) कलिम—ए—तय्यबा का इकरार और दिल से उसकी तसदीक (2) नमाज़ (3) रोजा (4) जकात (5) हज।

प्रश्नः किसी आदमी को कब मुसलमान कहा जा सकता है?

उत्तरः जब कोई आदमी इस्लाम के बुनियादी अकीदों पर ईमान ले आए और नेक काम करे तो वह मुसलमान कहलाता है।

प्रश्नः मुस्लिम के क्या माने हैं?

उत्तरः अपने आपको अल्लाह के हवाले कर देने वाले को मुस्लिम कहते हैं।

प्रश्नः कोई मुसलमान अगर माने और मतलब समझे बगैर कलिम—ए—तय्यबा पढ़ ले तो उसके बारे में क्या हुक्म है?

उत्तरः उसका शुमार तो मुसलमानों में होगा लेकिन सच्चा मुसलमान बनने के लिए जरूरी है कि वह कलिम—ए—तय्यबा के माने और मतलब को अच्छी तरह समझकर उस पर यकीन रखे और अमल करे।

प्रश्नः मोमिन किसे कहते हैं?

उत्तरः मोमिन वह शख्स होता है जो अल्लाह तआला की वहदानियत यानी उसके एक और सिर्फ एक होने, उसकी सिफात और उसके इनाम और सजा दिए जाने के कानून पर सच्चे दिल से ईमान और यकीन रखता हो।

प्रश्नः अगर कोई शख़्स अल्लाह तआला की मरजी के मुकाबले में अपनी मरजी को ऊपर रखता है तो उसके बारे में इस्लाम का क्या हुक्म है?

उत्तरः ऐसा शख़्स अस्ल में अपनी ख्वाहिशों को अपना माबूद बना लेता है और इस तरह वह शिर्क करने वाला बन जाता है जो इस्लाम में सबसे बड़ा गुनाह है।

प्रश्नः क्या इस्लाम की मुकम्मल तालीमात पर अमल करना ज़रूरी है?

उत्तरः जी हाँ! इस्लाम की तमाम तालीमात पर अमल करना ज़रूरी है। इस बारे में अल्लाह तआला ने फरमाया है कि ''तुम पूरे तौर पर इस्लाम में दाखिल हो जाओ'' जो शख़्स इस्लाम की कुछ तालीमात पर ही अमल करता है उसे शैतान का पैरोकार कहा गया है जो मुसलमानों का खुला दुशमन है।

प्रश्नः इस्लाम में अल्लाह तआ़ला की हस्ती का परिचय किस तरह कराया गया है?

उत्तरः इस्लाम में बताया गया है कि अल्लाह तआला वह हस्ती है जिसने जमीन और आसमानों को पैदा किया और इस कायनात में जो कुछ है वह सब अल्लाह का बनाया हुआ है।

प्रश्नः अल्लाह तआला की सिफत ''रब्बुल आलमीन'' से क्या मुराद है?

उत्तरः इस सिफ़त से मुराद यह है कि अल्लाह तआला ने हमें सिर्फ पैदा ही नहीं किया बल्कि पैदाइश के बाद उसने हमारी परवरिश और नशोनुमा का सामान भी मुहय्या किया।

❖❖❖

दीनदारों के लिए काम के मैदान

डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी रह0

अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपना आखिरी नबी बनाया, आप पर अपने बन्दों की हिदायत के लिए अपना कलाम उतारा जिसे हम कुर्आन मजीद के नाम से जानते हैं। नुबूव्वत के ऐलान के बाद से 23 वर्षों तक आप पर कुर्आने मजीद उतरता रहा और आप लोगों को कुर्आन मजीद पहुंचाते और लिखाते रहे और अल्लाह के अहकाम (आदेश) उम्मत को पहुंचाते रहे और उन अहकाम पर अमल करना कौलन (मुख से बता करके) व अमल करके बताते रहे कुर्आन के अलावा दीन के बारे में जो बातें आपने क़ौलन या अमलन बताईं उन सबको सहाब–ए–किराम ने महफूज़ कर लिया जिन्हें हम हदीस कहते हैं। (अल्लाह की रहमत हो अल्लाह के नबी पर) दीनी कामों में सब से अहम काम दीनी काम करने वालों का यह है कि वह अल्लाह की किताब कुर्आने मजीद को लफज़न व मअ्नन (शब्द तथा अर्थ) को महफूज़ रखें और उसे आने वाली पीढ़ियों में मुन्तक़िल करते रहें। इसी तरह यह काम भी बड़ा अहम है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस जिन्हें मुहद्दसीन (हदीस के जानकारों) ने किताबी शक़्ल में जमा कर दिया है, उन किताबों की हिफ़ाज़त हो और उनका अर्थ, आने वाली नस्लों में मुन्तक़िल होता रहे।

यह काम भी बड़ा अहम है कि कुर्आन व हदीस से जो अहकाम निकलते हैं जिन को सहाब–ए–किराम के अमल से समझ कर किताबों में महफूज़ कर दिया गया है जिसे हम इस्लामी फ़िक़्ह (इस्लामी विधान) के नाम से जानते हैं, उनका इल्म भी आने वाली नस्लों में मुन्तकिल करते रहें। यह तीनों काम बहुत अहम हैं लेकिन इनका इल्म पूरी तरह हासिल करने के लिए एक लम्बा वक्त दरकार है जो हर एक के बस का नहीं है इसी लिए यह हर मुसलमान पर फर्ज़ नही है लेकिन मुसलमानों में एक तादाद ऐसी ज़रूर होनी चाहिए जिसे कुर्आन व हदीस और फ़िक्हे इस्लामी का पूरा इल्म हो और यह सिलसिला बराबर चलता रहे।

अल्लाह तआला यह काम दीनी मदारिस से ले रहा है जहां कुर्आने मजीद को ज़बानी याद करने कुर्आने मजीद की तफ़्सीर (कुर्आनिक ज्ञान) अहादीस की अमली तशरीह (व्याख्या) फिक्हे इस्लामी की तालीम का मुकम्मल नज़्म है।

इस तालीम के लिए पहले मादरी ज़बान खास तौर से उर्दू और अरबी ज़बान का अच्छी तरह जानना ज़रूरी है इसलिए पहले उर्दू और अरबी ज़बानों का निसाब पढ़ाया जाता है फिर कुर्आन, हदीस और फिक्ह की तालीम दी जाती है इस तरह इसमें लम्बा वक़्त लगता है।

उर्दू, अरबी ज़बानों की तैयारी के साथ दूसरे दुनियावी ज़रूरत के मज़ामीन पढ़ाए जा सकते हैं और पढ़ाए जाते हैं जैसे हिन्दी, हिसाब, अंग्रेज़ी, साइंस और समाजी उलूम, जुगराफिया, तारीख़, इक़्तिसादियात (अर्थ शास्त्र) वगैरह लेकिन इसके बाद तफ़्सीर, हदीस और फिक़्ह का इल्म इतना वसीअ़ (विस्तृत) और दक़ीक़ (सूक्ष्म) है कि उनके साथ इंजीनियरिंग और डाक्टरी की तरह दूसरे मजामीन नहीं पढ़ाए जा सकते, कुछ दानिशवर मशवरा देते हैं कि मदारिस में इंजीनियरिंग और मेडिकल जैसे मजामीन भी पढ़ाए जाने चाहिए अस्ल में वह दीनी उलूम के निसाब से वाक़िफ़ नहीं होते

इसलिए ऐसा कहते हैं। मदरसे वाले दुनियावी उलूम के मुख़ालिफ़ नहीं हैं लेकिन उनका कहना है कि जिस तरह इंजीनियरिंग और मेडिकल की तालीम के साथ दूसरी तालीम नहीं हो सकती उसी तरह तफ़्सीर, हदीस और फिक्ह की मुकम्मल तालीम के साथ कोई दूसरी तालीम नहीं हो सकती।

रहा यह सवाल की आलिम होने के बाद दुनियावी ऐतिबार से वह समाज में पिछड़ा शुमार होगा अव्वलन तो यह बात सही नहीं है एक अच्छे आलिम को समाज आँखों में जगह देता है, दूसरी बात यह कि जिसको यह महसूस हो कि आलिम होने के बाद आर्थिक हैसियत से मैं पिछड़ जाऊँगा उसको चाहिए कि वह ज़रूरियाते दीन की तालीम हासिल करके अपना रास्ता बदल दे, यह दीन तो अपने पूरे उलूम के साथ महफ़ूज़ रहेगा, अल्लाह तआला ने खुद इसकी हिफ़ाजत का वादा फ़रमाया है अल्लाह तआला ऐसे लोगों को पैदा फ़रमाते रहेंगे जो इस दीन को पूरी तरह हासिल करते और अगली नस्लों में मुन्तकिल करते रहेंगे दुनियावी हैसियत से चाहे वह फ़ाक़ा कश ग़रीब रहे चाहे दौलत की रेल पेल रहे मुसलमानों के लिए ज़रूरी है कि वह दीनी मदरसों की दिल खोल कर मदद करते रहें।

मुसलमान बच्चों और बड़ों की दीनी तालीमः—

दीनी तालीम से यहां हमारी मुराद दीन की वह तालीम है जो हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है जिसे हम ज़रूरियाते दीन का नाम देते हैं। अब सरकारी तौर पर ऐसा इन्तिज़ाम किया गया है कि प्राइमरी तालीम बल्कि हाई स्कूल तक की तालीम हर बच्चा हासिल कर सके, ऐसी सूरत में हमारे लिए ज़रूरी हो जाता है कि हम अपने बच्चों को अपने तौर पर ज़रूरियाते दीन की तालीम दें, ऐसे में दीन का काम करने वाले गाँव—गाँव और महल्ले—महल्ले मसाई स्कूल (शाम के स्कूल) चलाते हैं जिनमें कुर्आने मजीद नाजिरा और उर्दू या हिन्दी ज़बान के ज़रिए दीनयात की तालीम देते हैं, लेकिन अभी बहुत से महल्ले और गाँव ऐसे हैं जहां इन मसाई मदरसों की ज़रूरत है।

आप ध्यान दें तो शहर और देहात में हमारे बहुत से भाई (जवान और बूढ़े मर्द और औरतें) कम पढ़े या अनपढ़ हैं और दीन से बिल्कुल नावाकिफ़ हैं, उन से मिलना उनको ज़रूरियाते दीन से वाकिफ़ कराना भी अहम काम है। इस काम को बड़े पैमाने पर तबलीग़ी जमाअत अंजाम दे रही है। चाहिए कि उनसे मिलकर यह काम किया जाए, अगर उनके साथ मिलकर काम करने में दुशवारी महसूस की जाए तो उन की मुख़ालफ़त न की जाए और अपने तौर पर जमाअत बना कर यह काम औरतों और मर्दों में अंजाम दिया जाए।

इस काम के साथ जो समाज में देवबन्दी, बरेलवी और अहले हदीस का इख़्तिलाफ बरपा है इल्म और हिकमत से उसे दूर करने की भी कोशिश की जाए लेकिन यह काम बड़ी हिकमत चाहता है। एक बड़ा अहम काम गैर मुस्लिमों में इस्लाम का तआरुफ है। कुछ इस्लाम मुखालिफ शख़्सीयतों और तंजीमों ने ग़लत प्रोपैगन्डे से इस्लाम को बदनाम करने की मुहिम चला रखी है ऐसे में गैर मुस्लिमों खास तौर से हिन्दू भाइयों में इस्लाम का सही तआरुफ़ (शुद्ध परिचय) कराना बहुत ज़रूरी है इस काम से जहां इस्लाम की खूबियों से वाकिफ़ होकर हमारे वतनी भाई अपनी स्वेच्छा से इस्लाम की इज़्ज़त करने पर मजबूर होते हैं वहीं कुछ भाई इस्लाम को अपना लेने में नहीं हिचकिचाते दीनी काम करने वालों के लिए बहुत से मैदान हैं उनमें से यह चन्द अहम काम पेश किये गये अल्लाह तआला दीन की खिदमत करने की तौफ़ीक़ से नवाज़े आमीन।

❖❖❖

भारत वासी भाई भाई

अब्दुल रशीद नसीराबादी

भारत वर्ष के सारे भाई, आपस में हैं भाई भाई।
हिन्दू, मुस्लिम सिख, ईसाई आपस में हैं भाई भाई।।

आग लगी गर किसी के घर में दौड़ के आये सारे भाई।
छण भर में है आग बुझाई, हिन्दू मुस्लिम सिख, ईसाई।।

सुख दुख में सब हाथ बंटाते, शुभ अवसर पर हाथ मिलाते।
देश गान सब मिलकर गाते, हिन्दू मुस्लिम सिख, ईसाई।।

मेला कुम्भ में भगदण आई, बहुतेरों ने जान गंवाई।
मदद को आये मुस्लिम भाई, आपस में हैं भाई भाई।।

अहाता मस्जिद का खुलवाया, आराम दिया खाना खिलवाया।
खुश तो हुए हैं सारे भाई, हिन्दू मुस्लिम सिख, ईसाई।।

पंजाब में बारिश ऐसी आई, बाढ़ से पीड़ित सारे भाई।
बहुतेरों ने जान गंवाई हिन्दू मुस्लिम सिख, ईसाई।।

खुलवाये मस्जिद और मदरसे खाना पका कर खूब खिलाया।
ये है मुहब्बत देखो भाई, हिन्दू मुस्लिम सिख, ईसाई।।

लड़ी लड़ाई आज़ादी की भारत को आज़ाद कराया।
लाखों ने है जान गंवाई, हिन्दू मुस्लिम सिख, ईसाई।।

अब भारत के वासी जागो, भेद भाव को मत फैलाओ।
एकजुट होता है अब भाई, हिन्दू मुस्लिम सिख, ईसाई।।

सिद्दीक़ी रचना का रचयिता कहता है समझो भाई।
मानवता का कर्म यही है, हिन्दू मुस्लिम सिख, ईसाई।।

❖❖❖

मोमिन की सरबुलन्दी ईमान का समरह

सैयद सुफियान अहमद नदवी लखनवी

अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में सूर–ए–आले इमरान की आयतः139 में इरशाद फ़रमाया कि ***''तुम न घबराओ न ग़म करो, तुम ही ग़ालिब रहोगे बशर्ते कि तुम मोमिन हो।''***

अगर हम दुनिया व आख़िरत में कामयाबी चाहते हैं तो हमें भी इस शर्त को उसके उसूल व ज़वाबित के मुताबिक़ ही पूरा करना होगा।

मोमिन यानी अल्लाह पर पुख़्ता ईमान व यक़ीन रखने वाला। पुख़्ता यक़ीन रखने वाला वही होगा जो अपने आमाल को भी अपने रब की मर्ज़ियात के मुताबिक़ अंजाम देगा, अपनी ज़िन्दगी को नबी–ए–अकरम के बताए और सिखाए हुए तरीक़े के मुताबिक़ गुज़ारेगा और इस बारे में किसी ग़ैर की बात नहीं सुनेगा बल्कि सिर्फ़ और सिर्फ़ अपने रब पर ही यक़ीन रखेगा और दुनिया की नज़र में मोमिन यानी मुसलमान वह है जिस शख़्स का भी मुसलमानों वाला नाम हो, भले ही उसकी चाल–ढाल मुसलमानों वाली न हो और वह अपने आप को इस तरह पेश करता हो कि वह मुसलमान है, और अपने को मुसलमान लिखता या ज़बानी बताता हो कि वह मुसलमान है तो तमाम दुनिया के लोग उसे मुसलमान ही समझते हैं। और उसके हर–हर अमल को मुसलमानों का ही अमल मानते हैं।

मिसाल के तौर परः अगर कुछ मुसलमान मस्जिद में पाँचों वक़्त की नमाज़ नहीं अदा कर रहे हैं या कुछ शराब पीते हैं या कुछ झूठ बोल रहे हैं या कुछ दाढ़ी नहीं रखते या कुछ मुसलमान औरतें और लड़कियाँ पर्दा नहीं करतीं और बेपर्दगी के अमल को अंजाम देती हैं या कुछ मुसलमान बुरे काम करते हैं या कुछ दूसरों का माल हड़प कर लेते हैं या कुछ शादियों में फ़ुज़ूलख़र्ची और बेकार की रस्में अंजाम देते हैं या कुछ वक़्फ़ का माल खाते हैं या कुछ मुसलमान किसी की ज़मीन पर नाजायज़ क़ब्ज़ा करते हैं तो दुनिया वाले कहते हैं कि देखो यह भी मुसलमान ही हैं और यह तो इस तरह के बुरे काम कर रहे हैं। यानी कि दुनिया वाले इस तरह के मुसलमानों को मुसलमान ही कहते और जानते हैं। अगर मुसलमान इन बुरी आदतों में लिप्त हैं तो फिर हम अपने ऊपर आने वाले हालात का किसी से शिकवा करने के हक़दार नहीं हैं कि कौन हमारे साथ क्या कर रहा है और क्यों कर रहा है! क्योंकि हम अपनी बर्बादी के सबसे बड़े ज़िम्मेदार ख़ुद ही हैं।

दुनिया में मुसलमानों के दीन, उनके आमाल, उनकी पहचान को मिटाने के लिए जितनी कोशिशें हो रही हैं या हो चुकी हैं शायद ही किसी क़ौम को मिटाने के लिए इतनी कोशिशें हुई हों। आज चन्द मुसलमानों के बुरे कामों और बुरी सिफ़ात को देख कर ही उसके फ़ैसले किये जाते हैं, अदालतें ज़ाहिरी चीज़ों को देख कर ही फ़ैसला सुनाती हैं चाहे वह फ़ैसला इस्लाम की रूह के ख़िलाफ़ हो इस से उन्हें कोई सरोकार नहीं।

इन सब बुराईयों का सरचश्मा सिर्फ़ और सिर्फ़ हमारे रब से हमारे ताल्लुक़ का कमज़ोर होना, हमारा अपने रब से दूरी इख़्तियार करना और अपने रब के वादे पर यक़ीन का न होना ही है। और इस बेयक़ीनी और दूरी के नतीजे में हम ग़ैरों से, उनके आमाल से, उनकी हरकतों से यहाँ तक कि उनके अक़ायद से क़रीब हो रहे हैं, उनके रंग में रंगे जा रहे हैं और पस्ती की तरफ़ बढ़ रहे हैं।

हमारा रब तो हम से कह

रहा है कि अगर तुम मोमिन बन जाओ यानी अपने परवरदिगार के अहकाम और अपने नबी–ए–अकरम सल्ल0 की सीरत को सौ फ़ीसद अपना लो तो तुम ही सबसे ऊपर, सबसे आला और सबसे अच्छे हो सकते हो लेकिन आज हमारा इस बात से यक़ीन उठ चुका है। हमारा यक़ीन तो ग़ैरों की बातों पर पुख़्ता होता जा रहा है कि हम यह कर लें तो ऐसे हो जाएंगे और वह कर लें तो वैसे हो जाएं और इतने बड़े और इतने बुलन्द और इतने मालदार और इज़्ज़त व मंसब वाले हो जाएंगे। जैसा कि बहुत से मुसलमान तो यह तक सोचते हैं कि अगर हम घर में नमाज़ अदा कर लें तो क्या हरज है, नमाज़ तो हो ही जाएगी मस्जिद में जाना क्या ज़रूरी है?या हम दाढ़ी न रखें तो कोई नुक़सान तो नहीं होगा वाजिब व सुन्नत ही तो है! या अगर हम झूठ बोल कर अपना काम निकाल लें तो क्या हरज है! थोड़ा गुनाह ही तो होगा लेकिन हमारा काम तो हो जाएगा! या हम शरीअत के मुताबिक़ पर्दा न करें तो क्या होगा? थोड़ा गुनाह ही तो होगा लेकिन दूसरे तो हम को अच्छा कहेंगे, हम को ख़ूबसूरत कहेंगे, हमारी तारीफ़ें तो करेंगे। या हम सूद–ब्याज पर रक़म ले लें तो हमारा कारोबार तरक़्क़ी कर जाएगा, हमारी कम्पनी बड़ी हो जाएगी और हमारी तिजारत मज़बूत हो जाएगी। क्या हुआ! दुनिया में सब लोग ही इसी तरह से कारोबार कर रहे हैं और दुनिया का निज़ाम ही इसी तरह चल रहा है तो हम भी कर सकते हैं! या उन्होंने यह ग़लत सोच ही बना ली है कि आज के ज़माने में बग़ैर सूद–ब्याज के रक़म हासिल नहीं की जा सकती और तिजारत को तरक्की नहीं दिया जा सकता वग़ैरा–वग़ैरा।

यह सब शैतान का धोखा है, हमारे मालिक से हमारा ताल्लुक़ कमज़ोर होने की बुनियाद पर ऐसा होता है। यह सब हमारी ख़ुद की ही कमज़ोरी और कोताही है कि हम ने इस्लाम को अपने नबी–ए–अकरम सल्ल0 के लाए हुए अहकामात और नबी–ए–अकरम सल्ल0 की सीरत के मुताबिक़ लाज़िम नहीं पकड़ा। हम ने इस्लाम को अपनी मन–मर्ज़ी जहाँ चाहा और जैसे चाहा इस्तेमाल किया और अपने आमाल को लोगों के सामने अपनी मन–मर्ज़ी से पेश किया जिसको देख कर पूरी दुनिया हमारे ख़िलाफ़ होती जा रही है और हम इस धोखे में हैं कि हम अच्छा कर रहे हैं।

इस्लाम के हर हुक्म में अल्लाह तआला की कोई न कोई मस्लेहत और एक राज़ पोशीदा है जो हमें ख़ुदा से क़रीब करता है और बुलन्दी की तरफ़ ले जाता है, बशर्ते कि हम उस पर अमल करें और अल्लाह पर यक़ीन रखें।

आज दुनिया में न जाने कितने फ़ैसले हमारे ख़िलाफ़ होते जा रहे हैं, चाहे वह तीन तलाक़ का मसला हो जिस पर हम में से कुछ मुसलमानों ने ही अपने सही इस्लामी तरीक़े को नहीं अपनाया तो तमाम मुसलमानों पर इसके ग़लत फ़ैसले को थोपा जाने लगा।

चाहे वक़्फ़ की जायदादों का मसला हो कि हम में से कुछ मुसलमानों ने उनमें ख़ूब लूट–खसोट की तो हम सब से उनको छीना जाने लगा और हमारी ही जायदादें हम से छीनी जाने लगीं। चाहे मसाजिद व मकातिब व मदारिस के क़याम का मसला हो कि हम में से कुछ मुसलमानों ने इन सबको अपने ज़ाती मफ़ाद का ज़रिया बना लिया तो हम सब पर आफ़तें आने लगीं। चाहे पर्दे और हिजाब का मामला हो कि हम में से कुछ मुसलमान औरतों–लड़कियों ने इसको छोड़ा तो मुश्किलें बढ़ने लगीं या जायदाद में बहनों की विरासत का मसला हो जिसे हम में से कुछ मुसलमानों ने अनदेखा किया तो हमारी अपनी जायदादें भी हम

से फिसलने लगीं। या हम में से कुछ मुसलमानों ने घरों में औरतों के साथ बुरे बर्ताव, मारपीट और तशद्दुद को जन्म दिया तो हमारे घर के अन्दुरूनी मसायल को दुनियावी अदालतों में अवाम के सामने ग़ैर शरई तौर पर हल करने की कोशिशें होने लगीं और दुनिया में फ़र्ज़ी समानता का ढिंढोरा पीट कर यक्साँ सिविल कोड नाफ़िज़ करने का और फ़र्ज़ी आज़ादी का छलावा दिया जाने लगा।

हम सब अपने आमाल, अपने किरदार, अपने अख़्लाक़ और अपने लाइफ़ स्टाइल पर ख़ूब ग़ौर व फ़िक्र करें और गहराई से सोचें कि ग़ैर मज़हब के लोग तो अल्लाह तआला की नाज़िल की हुई किताब कुरआने मजीद का मुताला नहीं करेंगे, वह हमारी अहादीस की किताबों का मुताला भी नहीं करेंगे और न ही हमारी दीनी इस्लामी किताबों का मुताला करेंगे। बल्कि वह तो हमारे हाल, हमारे आमाल, हमारे किरदार, हमारे अख़्लाक़ और हमारे मामलात को देख कर ही हमारे बारे में अपनी राय क़ायम करेंगे और उसी के मुताबिक़ फ़ैसला भी चाहेंगे। मिसाल के तौर पर अगर कुछ मुसलमान दाढ़ी नहीं रखते तो वह यही समझेंगे कि इसका मतलब यह है कि मुसलमान अगर दाढ़ी को छोड़ दे तो कोई हरज की बात नहीं क्योंकि बहुत से मुसलमान तो दाढ़ी रखते ही नहीं। अगर मुसलमान मस्जिदों के बजाए घरों में नमाज़ अदा करते हैं तो वह यही मतलब निकालेंगे कि बहुत से मुसलमान तो घरों में नमाज़ अदा कर लेते हैं इसलिए मुसलमानों के लिए मसाजिद का क़ायम करना ज़रूरी नहीं है, या बहुत से मुसलमान रमज़ानुल मुबारक के रोज़े छोड़ देते हैं, तो इसका मतलब यह हुआ कि मुसलमानों के लिए रमज़ानुल मुबारक में रोज़ा रखना ज़रूरी नहीं है। या मुसलमान औरतें और लड़कियाँ बेपर्दा बाज़ारों और महफ़िलों में नज़र आती हैं तो इसका मतलब यह हुआ कि पर्दा करना मुसलमानों के लिए ज़रूरी नहीं है और मुसलमान औरतें बेपर्दा भी रह सकती हैं।

इन सब बातों के नतीजे में ग़ैर मुस्लिम हमारे उलमा पर भी कटाक्ष करते हैं और कहते हैं कि ''मुसलमान तो ऐसा—ऐसा कर सकते हैं या करते हैं तो यह उलमा उनको इन बातों से क्यों रोकते हैं?'' और फिर वह हमारे उलमा को बुरा—भला भी कहना शुरु कर देते हैं कि ''यह सब इन उलमा की बनी—बनाई हुई और मनगढ़त सोच है जिसे वह मुसलमानों पर थोप रहे हैं और यह सब पुरानी और क़दीमी बातें हैं, अब ज़माना बदल चुका है और मुसलमान भी एडवांस हो रहे हैं और वह ख़ुद समझदार हैं इसी लिए वह पुरानी बातों पर अमल करने के बजाए आगे बढ़ रहे हैं और वह भी ज़माने के साथ क़दम से क़दम मिला कर चलना चाहते हैं लेकिन यह उलमा इनको आगे नहीं बढ़ने दे रहे हैं, लिहाज़ा मुसलमानों को तो उलमा की कोई ज़रूरत ही नहीं है। नऊज़ुबिल्लाहि मिन ज़ालिक।

और इसके अलावा भी न जाने कितनी कमियाँ और ख़राबियाँ हैं जिन्हें यहाँ बताने का मौक़ा नहीं है। हमारी बेअमली ने ही ग़ैरों को हमारे ख़िलाफ़ बोलने पर जुराअत अता की है और उन्हें हमारे ऊपर मुसल्लत कर दिया है। सच्ची हक़ीक़त यह है कि ग़ैर मुस्लिम ख़ुद से कुछ नहीं समझ रहे हैं बल्कि हम ख़ुद ही अपनी इस बेअमल ज़िन्दगी से उन्हें बता रहे हैं कि हमारे लिए इस्लामी तालीमात व अहकाम इतने ज़रूरी नहीं है।

यही वजह है कि आज इस्लामी तालीमात पर अमल करने की आज़ादी हम से छीनी जा रही है क्योंकि जब हमें मज़हबी आज़ादी मिली हुई थी तो हमने उस पर जमने की कोशिश नहीं की, लेकिन आज जब हम से यह मज़हबी आज़ादी छीनी जा रही है तो हम

तिलमिला रहे हैं और इसका ठीकरा ग़ैरों पर फोड़ रहे हैं।

इस्लाम पर ग़ैरों का कटाक्ष करना कोई नई चीज़ नहीं, लेकिन यह निहायत अफ़सोस का मुक़ाम है कि बाज़ कम ज़र्फ़ मुसलमान भी इन बातों से मुतास्सिर हो कर इस्लामी उसूलों और अहकाम में तबदीली के शैदाई दिखाई पड़ते हैं। यह उनकी दीन से दूरी और ईमान की कमज़ोरी की अलामत है।

हर शख़्स को यह याद रखना चाहिए कि इस्लाम ही वह दीन है जो क़यामत तक के लिए नाज़िल किया गया है। जो हर ज़माने में और हर ज़माने के बदलते हुए हालात में भी हर वक़्त पूरी इन्सानियत को राह दिखाता है। बस हमें चाहिए कि हम अपने अमाल से इस्लाम की सही तस्वीर लोगों के सामने पेश करें, और ग़ैरों की तरफ़ से जो एतेराज़ात इस्लाम पर किये जाते हैं उनका इल्मी, अख़्लाक़ी और सबसे ख़ुसूसी तौर से अमली तौर पर नमूना बन कर जवाब दें। खुद नबी–ए–अकरम सल्ल0 के तरीक़े पर चल कर दिखाएं ताकि ग़ैर क़ौमें इस्लाम की हक़्क़ानियत और उसकी असलियत को समझ सकें। फिर देखें कि अल्लाह तआला हमें दुनिया और आख़िरत में किस तरह सरबुलन्दी अता करता है और हम सारी दुनिया की नुमाइन्दा क़ौम के तौर पर सामने आते हैं।

ख़ासतौर से हम अपने नबी की सीरत को हर लम्हा अपने सामने रखें, हुस्ने अख़्लाक़ अपनाएं। कुरआन को समझ कर पढ़ें और उस पर अमल करने की भरपूर कोशिश करें। हलाल रोज़ी कमाएं। सूद, रिश्वत से बचें। झूठ, ग़ीबत, हसद और इस तरह की तमाम बुराईयों से दूर रहें। दीन को ज़िन्दगी के हर शोबे में नाफ़िज़ करने की कोशिश करें और सबसे ज़रूरी और अहम बात! अपने मालिक पर मुकम्मल यक़ीन और भरोसा रखें।

अल्लाह तआला हम सबके ईमान व यक़ीन को पुख़्ता बनाए और अपने रब की मर्ज़ियात पर चलने, अपने रसूल की सीरत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने वाला बनाए जिस से इस्लाम को सरबुलन्दी हासिल हो और ग़ैरों के डर और ख़ौफ़ से दिलों को नजात हासिल हो।

❖❖❖

अपने पाठकों से

- सच्चा राही आपको कैसा लगा आप अपनी राय से अवगत करें, हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं। हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- हम अपने सम्मानित लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक विषयों पर अपने मूल्यवान लेख लिख कर हमें भेजें, हम आपके शुक्र गुज़ार होंगे।
- आप अपने लेख सरल भाषा में लिखें तथा विषय स्पष्ट हो, जो पाठकों को आसानी से समझ में आ सकें।
- आप सच्चा राही के नये ग्राहक बना कर हमारा सहयोग करें।
- आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके समाधान लिख कर सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे।
- **आप अपने लेख भेजने के लिए उप सम्पादक के नं0 9450784350 का प्रयोग करें।**

E-mail: *jamalnadwi123@gmail.com*

पत्रकारों का क़त्ल अंतर्राष्ट्रीय अपराध

नौशाद खान

पत्रकारिता का संक्षिप्त अवलोकनः—

पत्रकारिता समाज का आईना है समाज की वह आँख है जो सोती नहीं, पत्रकारिता का मक़सद सत्ता पर नज़र रखना, जनता को घटनाओं, विचारों और सूचनाओं से अवगत कराना और कमज़ोरों की आवाज़ बनना, जिससे समाज में जागरूकता, शिक्षा और संवाद स्थापित हो सके।

(The Elements of Journalism 2001) पत्रकार जनता की आँख और कान होते हैं।

लेकिन अगर उस आईने को ही तोड़ दिया जाए और उस आँख को फोड़ दिया जाए, तो क्या जनता कभी सच देख पाएगी? युद्ध, संघर्ष, राजनीतिक उथल—पुथल, भ्रष्टाचार, सामाजिक उतार चढ़ाव, गरीबों का उत्पीड़न, मानव जाति के अधिकारों का हरण, और अत्याचार देश विदेश के आर्थिक मामले क्या कभी इन विषयों के बारे में जानकारी प्राप्त कर पाएगी ? नहीं।

पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहासः—

पत्रकारिता आज से नहीं सदियों से अपना कार्य कर रही है उसने एक लम्बा सफर तै कर आज सोशल मीडिया तक पहुँच गई है और अब सोशल मीडिया के नाम पर ऐसे ऐसे करतब दिखा रही है जिसका आज से पहले मानव जाति के लिए कल्पना करना भी असंभव था अब मानव जाति क्षण भर में देश दुनिया की खबरें प्राप्त कर लेती है।

पत्रकारिता पर अमानवीय शक्तियों का प्रभुत्वः—

जैसे ही मीडिया का लाभ दुनिया को दिखने लगा तो मानवता के दुश्मनों ने इसे अपने नियंत्रण में करने के लिए हर संभव प्रयास किया और वह सफल रहे। विशेष रूप से 1897 में न्यूज़ीलैंड के शहर बाल में थियोडोर हर्जल की देखरेख में जो बैठक हुई जिसमें दुनिया के बड़े—बड़े यहूदी धार्मिक गुरु फिलॉस्फर इकोनॉमिस्ट जिनकी गिनती लगभग 300 के आसपास थी सम्मिलित थे उन्होंने कुछ प्रोटोकॉल बनाए इसके 12वें प्रोटोकॉल में दुनिया को अपनी रणनीति के मुताबिक प्रोग्राम्स दिखाने और दुनिया को मीडिया द्वारा नया रंग रूप देने के संदर्भ में खुले शब्दों में विवरण मिलता है जिसमें वह सोने के बाद दूसरा सबसे शक्तिशाली हथियार मीडिया को बताते हैं जिसका नतीजा आज पूरा मानव समाज भुगत रहा है लेकिन हम यहाँ केवल उस दृष्टिकोण का उल्लेख करेंगे जो पूरे संसार के लिए चर्चा और चिंता का विषय बना हुआ है। और वह है गाजा की ज़मीनी रिपोर्टिंग और रिपोर्टर्स की हत्या।

दोनों महायुद्ध में मारे गए पत्रकार और पिछले 2 सालों में मारे गए पत्रकारों की संख्याः—

7 अक्टूबर से लेकर अब तक 280 से ज़्यादा पत्रकारों को इसराइल ने मौत के घाट उतार दिया, इन सालों में जितने पत्रकार मारे गए वह प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध से 70 गुना ज़्यादा है। *Freedom forum* और *committee to protect journalist (CPJ)* के अनुसार प्रथम विश्व युद्ध जो 1914 से 1918 तक चला द्वितीय विश्व युद्ध जो 1939 से 1945 तक चला इन दोनों जंगो में लगभग

68 मीडिया कर्मी शहीद हुए। लेकिन फिलिस्तीन में मारे जाने वाले पत्रकारों की संख्या 280 के पार है *(CPJ)* कहती है कि फलस्तीन में पत्रकारों को मारना इजराइल की आदत बन चुकी है।

(CPJ) और अन्य संगठनों के अनुसार फलस्तीन में पत्रकारों को क़त्ल करने के बाद उनको हमास का सदस्य बताया जाना एक झूठा दावा है इजरायली सेना अंतरराष्ट्रीय पत्रकारों को गाजा में रिपोर्टिंग करने से रोकने का भ्रसक प्रयास कर रही है और स्थानीय मीडिया ठिकानों को भी नुकसान पहुंचा रही है अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुसार पत्रकार सुरक्षित नागरिक होते हैं *(CPJ)* कहती है कि इसराइल ने पत्रकारों का क़त्ल सिर्फ इसलिए किया कि सच दुनिया के सामने न आए, पहले किसी बिल्डिंग पर हमला करता है और जब मीडिया कर्मी और बचाव दल वहाँ जाते हैं तो इसराइल उन पर दोबारा हमला करके सब कुछ तहस–नहस कर देता है और सच का कोई अवशेष नहीं छोड़ता।

फिलिस्तीनी पत्रकारः–

वाइल अल दोहदोहः वाइल गाजा में *Al Jazeera* के ब्यूरो हैड थे। वाइल दिन रात बिना आराम किए रिपोर्टिंग कर रहे थे। इजरायली बमबारी में उनके पूरे परिवार को शहीद कर दिया गया जब उनको इसकी ख़बर लगी तो वह रिपोर्टिंग करते अस्पताल के अंदर पहुंचे तो देखते हैं कि मृतक उनकी फ़ैमिली ही है अंदर गए न्यूज रिपोर्टर्स ने उनका इंटरव्यू लिया इंटरव्यू के दौरान उन्होंने बड़े साहस के साथ पूरी घटना का वर्णन किया लेकिन जैसे ही उन्होंने अपनी 7 साला बेटी का जिक्र किया उनकी आंखें भर आईं, वाइल के 8 बच्चे थे हम्जा 27, बिस्सान 25, सुन्दुस 23, खुलूद 21, बतूल 18, महमूद 15, आदि यह पूरा परिवार एक ही हमले में शहीद हो गया।

अब्दुल सलाम फराहः अल जजीरा के एंकर हैं कहते हैं जब मैंने टेलीप्रॉम्पटर पर वाइल की मौत की ख़बर देखी तो मेरी आंखों से आंसू निकल पड़े क्योंकि वह परिवार की शहादत के ग़म में थे मैं उनका सहकर्मी होने की वजह से जानता था।

फलस्तीनी फोटो पत्रकार अब्दुल रहीम खादर का पूरा परिवार जो 38 सदस्यों का था उनके घर को टारगेट करके पूरे खानदान को शहीद कर दिया।

अनस जमाल शरीफः अल शिफा हॉस्पिटल के बाहर न्यूज रिपोर्टर्स का टेंट लगा था इजरायली सेना ने ड्रोन से टारगेट कर पूरे टेंट को उड़ा दिया जिसमें अल जजीरा के पांच पत्रकारों को नागरिकों के साथ शहीद कर दिया। अनस जमाल की आखिरी वसीयत थी की गाजा को ना भूलना।

मरियम रियाज अबू दक्काः एक फ्रीलांस फोटो जर्नलिस्ट थी एसोसिएटेड प्रेस और इंडिपेंडेंड अरेबिया के लिए कार्यरत थी खान यूनुस के नासिर अस्पताल पर इजरायली सेना ने दो बार हमला किया पहले हमले में राइटर के पत्रकार हुसाम अलमिश्री शहीद हुए दूसरे में मरियम रियाज और चार अन्य पत्रकार शहीद हुए याद रहे मरियम और अन्य पत्रकार पहले हमले के बाद घायल लोगों की सहायता के लिए पहुंचे थे जब इसरायली सेना ने देखा कि पत्रकार हमले को कवर करने के लिए अंदर जा चुके हैं तो फिर टारगेटिंग किलिंग की जिसमें पाँचों पत्रकार मारे गए। यह केवल इसलिए था ताकि वह हमले की कवरिंग मीडिया पर ना डाल सकें।

मरियम ने अपने बेटे गौस से कहाः बेटा मैं मर जाऊँ तो तुम रोना मत मेरी यादों को

संभाल कर रखना और मुझसे भी अच्छे इंसान बनना तुम मेरी आत्मा हो। ऐसे ही 280 में से हर एक फलस्तीनी पत्रकार की दास्तान दर्द भरी है इसराइली सेना ने जानबूझ कर पत्रकारों के घरों को और मीडिया ठिकानों को तबाह किया और उनकी तबाही अभी भी जारी है ताकि सच्चाई लोगों तक न पहुंचे।

अंतर्राष्ट्रीय कानून और सुरक्षाः—

अब हम उन कानूनों का वर्णन करेंगे जो नागरिकों की सुरक्षा एवं प्रेस की स्वतंत्रता के अधिकारों की बात करते हैंः वह अंतर्राष्ट्रीय क़ानून जिनका इजरायली आर्मी उल्लंघन कर रही है लेकिन अंतर्राष्ट्रीय संगठन चुप्पी साधे हुए हैं।

UDHR 1948 धारा 19 *(Universal Declaration of Human Rights)* जिसमें हर व्यक्ति को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सूचना और विचारों को फैलाने का पूरा अधिकार है।

ICCPR 19 (International Covenant on Civil and Political Rights): नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय वाचः इसमें *UDHR* से आगे बढ़कर पत्रकारों पर सरकार को अनुचित रोक लगाने पर पाबंदी है।

Geneva conventions (1949): जिनेवा कन्वेंशन्स के अनुसार युद्धक्षेत्र में कार्यरत पत्रकारों को सिविलियन स्टेटस दिया गया है। उन पर हमला, हिरासत, या जानबूझ कर निशाना बनाना अंतर्राष्ट्रीय मानवतावादी कानून के तहत *War Crime* है।

CPJ (committee to protect journalist): पत्रकारों को सुरक्षित वातावरण युद्ध क्षेत्र में सुरक्षा उपकरण और कानूनी संरक्षण प्रदान करता है लेकिन यहां *CPJ* चुप्पी साधे हुए केवल चिंता जताने पर खुश है।

ECHR 1950 (धारा 10): इसमें हर व्यक्ति को सूचना प्राप्त करने और फैलाने का अधिकार शामिल है प्रेस पर सरकारी दखल केवल सार्वजनिक सुरक्षा नैतिकता विशेष मामलों में हो सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय कानून का उल्लंघन करने की सजाः—

लेकिन इजराइल जो कर रहा है वह युद्ध अपराध है जिसकी सजा अंतर्राष्ट्रीय क़ानून के अनुसार आजीवन कारावास मृत्युदण्ड, भारी जुर्माना और अंतर्राष्ट्रीय मुकदमा है। और अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय *ICC* संयुक्त राष्ट्र और जिनेवा कन्वेंशन इन कानून को लागू करने के लिए जिम्मेदार हैं।

लेकिन सभी अंतर्राष्ट्रीय संगठन चुप हैं इसका सीधा कारण राजनीतिक इच्छा शक्ति और वैश्विक ताक़त के संतुलन का बिगाड़ है इसीलिए युद्ध अपराधी और पत्रकारों के हत्यारे खुलेआम घूम रहे हैं और जिस देश को चाहते हैं चुनौती देते हैं और एक कम्यूनिटी का नरसंहार करते हैं।

पत्रकारिता की दोहरी परीक्षाः—

आज की दुनिया में पत्रकारिता दो तरफा चुनौती से गुजर रही है। एक ओर वे पत्रकार हैं जो सच दिखाने की वजह से हत्या, धमकी और निर्वासन का सामना कर रहे हैं। दूसरी ओर कुछ मीडिया संस्थान और रिपोर्टर ऐसे भी हैं जो जानबूझ कर नरसंहार को नज़रअंदाज़ कर किसी एक पक्ष को निर्दोष और दूसरे को दोषी दिखा रहे हैं। यह रवैया न केवल पत्रकारिता की गरिमा को चोट पहुँचाता है बल्कि अन्याय और हिंसा को बढ़ावा देता है। सच्ची और स्वतंत्र पत्रकारिता तभी संभव है जब खबरें सत्य, ईमानदारी और न्याय के आधार पर प्रस्तुत की जाएँ वरना चुप्पी या पक्षपात भी अत्याचार में भागीदारी मानी जाएगी।

(लेखकः नदवतुल उलमा के छात्र हैं)

❖❖❖

करतूत

मायल ख़ैराबादी

चाँदनी रात थी, मैं चारपाई पर लेटा था, अभी कच्ची ही नींद थी कि आस पास कुछ खुसर फुसर होती सुनी, ध्यान दिया तो मालूम हुआ कि मेरे ही हाथों पैरों आँख और कानों में कुछ बातचीत हो रही थी, बीच में मियाँ पेट भी बैठे हुए थे। हाथ सबसे कह रहा था।

''दोस्तो! यह मेरा मालिक, यही अहमद सईद जिसका मैं हाथ कहलाता हूँ देखो तो अभी है कितना सा लेकिन बड़ा ही बेमुरव्वत और बेईमान है। अल्लाह मियाँ ने जो जरा इख़्तियार इसे दे दिया है कि अपनी मर्जी से भी कुछ कर सकता है तो आपे में न रहा। खुदा को भूल गया घमण्ड करने लगा, अल्लाह मियाँ ने मुझे इसके बस में कर दिया। चाहिये तो यह था कि मुझसे खैरात करता लेकिन करता यह है कि लोगों के पैसे छीनता है, अपने से कमज़ोर बच्चों के थप्पड़ लगाता है, मारता है, देखो तो स्कूल जाने में गैर हाजिरी भी करता है। पढ़ता कुछ है लिखता कुछ है एक एक पर्चे पर गालियां लिख कर शौकत को दी गन्दे गाने तो लिख लिख कर रोज ही बाँटता है। तौबा तौबा कितना बुरा है मेरा यह मालिक अहमद सईद, मैं तो इससे परेशान हो गया हूँ।''

हाथ चुप हुआ तो पैर बोला हाँ यार! यह ऐसा ही है मुझ ही को देखो कैसा परेशान करता है। अल्लाह मियाँ ने मुझे भी तो इसके बस में कर दिया है इसे चाहिये था कि मस्जिद की तरफ जाता। अल्लाह की मर्जी के कामों में दौड़ धूप करता। मगर करता क्या है?– आवारा गर्दी, आवारा गर्दी।

आप समझे! अरे भई, बेकार में इधर उधर बुरे कामों के लिए चक्कर लगाता है, लड़ाई झगड़ों की तरफ दौड़ता है बुरे खेलों की तरफ दौड़ता है। दूसरे लड़कों के लंगड़ी लगाकर उन्हें गिरा देता है। ठोकरें मारता है। भाई हाथ! ''तुमने बिलकुल सच कहा। हमारा यह अहमद सईद बड़ा ही बुरा है, मैं भी परेशान हूँ।''

पैर चुप हुआ तो आँख फड़क कर बोली ''हाँ जी! यह ऐसा ही है। देखो न। अल्लाह मियाँ ने मुझे इसके चेहरे पर कैसी अच्छी जगह दी है मेरी वजह से कैसी खूबसूरती आ गई है इसके चेहरे में। भाई हाथ और पैर ! आप दोनों ने बिल्कुल ठीक कहा कि अल्लाह मियाँ ने इसे हम पर जरा से क्या इख़्तियार दे दिया यह आपे में नहीं रहा। इतराता फिरता है। इसे चाहिये था कि हमसे अल्लाह मियाँ की मर्जी के मुताबिक काम लेता– कुरआन को पढ़ता, हदीस पढ़ता, अच्छी अच्छी किताबे देखता मगर मुझसे भी उल्टा ही काम लेता है बेशर्मी से मुझे भटकाता है। नाच देखता है बुरी किताबें पढ़ता है आप लोग बिल्कुल सच कहते हैं कि हमारा मालिक अहमद सईद बड़ा ही शैतान है समझ में नहीं आता इससे कैसे छुटकारा मिले''।

अभी आँख न जाने कितनी देर फड़क–फड़क कर शिकायत करती कि कान बोल पड़ा ''साथियो! बिल्कुल ठीक, मेरा हाल भी बिल्कुल तुम्हारी तरह है जब यह देखता है कि अच्छी बातें मेरे अन्दर आ रही हैं तो भाग जाता है मुझ में ऊँगलियाँ ठूस लेता है। बुरी बातें, गालियाँ, ग़ीबत की बातें सुनना इसे बहुत ही पसन्द है। कान इतना ही कह सका था कि मियाँ पेट ''ऊफ़ अल्लाह, ऊफ अल्लाह'' कर के बोले ''भाइयो! जरा मेरी तरफ देखो। मैं तो तुम सबसे ज़्यादा सईद से घबरा गया हूँ। रात दिन अंगारों से मुझे भरा करता है। हराम हलाल की इसे परवाह ही नहीं चोरी के लड्डू हों छीन झपट की रेवड़ियाँ हों,

धोखा देकर लाई हुई टाफी हो कुछ भी हो, न यह फिक्र कि ऐसी कमाई से अल्लाह मियाँ नाखुश होते हैं। न यह परवाह कि ऐसे कामों से इस्लाम बदनाम होता है। बस मुझे भरने से मतलब, भाईयो! मुझसे तो अब इसका कहना माना नहीं जाता। मगर क्या करूँ अकेला हूँ अकेला चना भाड़ को कैसे फोड़ सकता है।''

''मियाँ पेट इस तरह झुंझला कर खामोश हुए तो दिल और दिमाग़ ने इसी तरह की बातें की और फिर रुवाँ रुवाँ यही रोना रोने लगा। जुबान अभी तक चुप थी। सबसे आखिर में यह चहकी वो यह कि ''अरे तो फिर इस तरह रोने धोने से क्या होता है, कर डालो न कोई फैसला और हॉ मियाँ दिल और दिमाग साहब! हम में तुम ही दोनों ऐसे हो इसलिए तुम आपस में सलाह करके बताओ कि हमें क्या करना चाहिए?

ज़बान इस तरह चटकी तो दिल ने दिमाग की तरफ देखा दिमाग ने दिल की तरफ और फिर दिल ने जुबान की तरफ इशारा किया और जुबान पुकार उठी।

''बाईकाट, हड़ताल!''

''बहुत ठीक मगर हमारी माँगे क्या होंगी? हाथ, पैर, आँख, कान, नाक वगैरा सबने पूछा।

''हमारी माँगे?'' जुबान ने दिल की तरफ देखा दिल ने दिमाग से मश्वरा किया, फिर दिमाग ने दिल से कहा फिर दिल ने जुबान को टेलीफोन कर दिया और जुबान ने ऐलान किया।

''हमारी माँग सिर्फ यह है कि हम से सिर्फ वही काम लो जिससे हमारा पैदा करने वाला राजी हो।''

जुबान ने यह ऐलान किया तो एक दम सन्नाट छा गया और उस सन्नाटे के साथ मेरी नजरों के सामने अंधेरा फैल गया अब मैं चाहता हूँ कि कुछ देखूँ लाख आँखें फाड़ फाड़ कर कोशिश करता हूँ लेकिन सुझायी नहीं देता ऐसा लगता है जैसे आँखे पथरा गई।

आँख की यह हालत देखी तो मैंने चाहा कि हाथ की टेक लगाकर उठूँ। अरे भाई! मैं उठता ही क्या मेरा हाथ ही न उठ सका लाख जोर करता था मगर जैसे सो जाता हूँ न! जैसे सुन हो जाता है न! उससे भी बुरी हालत हो गई उसकी।

अब मैंने चाहा पैर समेटूँ। तो ऐसा लगा कि जैसे पैरों की जान निकल गयी। मैंने चाहा कि अब्बाजान को पुकारूँ लेकिन जुबान है कि चुप मुझ से चलायी ही नहीं गई। मैंने सोचा कि नाक से जोर जोर से साँस लूँ तो शायद अब्बाजान सुनें तो मुझे उठायें लेकिन अब साँस ही नहीं ली गई और इस तरह एक एक करके मेरे जिस्म का रुवाँ रुवाँ बेकार सा हो गया और आखिर में मेरे अन्दर सोचने की ताक़त भी न रही।

फिर मुझे ऐसा मालूम हुआ, जैसे मेरी आँख खुल गई हो, मैंने खुदा का शुक्र अदा किया कि यह सब ख्वाब में होता रहा। जब मैं जागा तो सोचने लगा कि अगर अल्लाह तआला सचमुच मेरे हाथ, पैर, आँख, कान, दिल व दिमाग़ वगैरा को ये इख़्तियार दे देता कि इसी तरह हड़ताल कर देते जैसे सोते में मैंने देखा। तो मेरा क्या हाल होगा?

ऊफ अल्लाह! मैं कुछ भी तो न कर सकूँ, न देख सकूँ न कुछ खा सकूँ, न पढ़ सकूँ, न लिख सकूँ। कुछ भी तो न कर सकूँ यह सोचते सोचते मैंने अपने रोयें रोयें को देखा खुदा का शुक्र है अब मैं जाग रहा था और मेरे हाथ, पैर वगैरा सब अपना अपना काम कर रहे थे। मैं बड़ा खुश हुआ लेनिक दिल ने आवाज़ दी।

''मियाँ सईद! आपे में रहो। इतना खुश न हो इतना न फूलो कि पेट फट जाये आज तुम हम सब पर मालिक बना दिये गये हो तो क्या हुआ एक दिन ऐसा ज़रूर आएगा जब तुम अल्लाह के हुजूर में खड़े किये जाओगे। तुमने यहाँ जो कुछ किया है उस वक़्त तुम्हारे सारे करतूत सबके सामने होंगे

तुम्हारा मुकदमा होगा। तुम से एक एक काम के बारे में पूछ गछ होगी उस वक़्त हम तुम्हारे खिलाफ इसी तरह गवाही देंगे।

मियाँ सईद! हमें देखो! अल्लाह मियाँ ने हम सबको तुम्हारे ताबेदार बनाया जब तक अल्लाह की मर्जी है हम सब तुम्हारा हुक्म मानेंगे तुम जो चाहोगे वैसा करेंगे! तुम आज जो चाहो हम से काम ले लो मगर वह दिन याद कर लो जब कोई तुम्हारा साथ देने वाला न होगा तुम्हारे अब्बा भी तुम्हारा साथ न देंगे तुम्हारी माँ तो तुमसे दूर भागेगी, सोचो! उस दिन तुम क्या कर सकोगे? तौबा करो मेरे इस दुनिया के मालिक से और आखिरत की फिक्र करो।''

दिल ने मुझसे इस तरह कहा तो मैं काँपने लगा मैं पसीने पसीने हो गया फिर मैं एकदम चीख चीख कर रोने लगा घर वाले हैरान हो गये सईद को क्या हो गया है सब पूछने लगे क्या हुआ, क्या हुआ?

मैंने किसी की बात का ज़वाब न दिया, मैं सज्दे में गिर गया। और तौबा तौबा करने लगा फिर सज्दे से सिर उठाया। अम्मी जान और अब्बाजान को आप बीती सुनायी सबकी आँखों में आँसू तैरने लगे। वह दिन है और आज का दिन मैं इस कोशिश में हूँ कि जो काम करूँ अल्लाह की मर्जी का करूँ।

❖❖❖

पृष्ठ ...17.....का शेष

ने खुश होकर उसके नीचे यह लिखा कि मैं इस बात का दिल और जान से इच्छुक था और वर्षों से इसकी प्रतीक्षा कर रहा था। बादशाह को फतवा देने का अधिकार मिल गया तो फिर इज्तेहाद की राहें खुल गयीं, इमाम की राय प्रमाण समझी गयी, किसी का विरोध अब शेष नहीं रहा। हलाल और हराम का झगड़ा समाप्त हो गया, शरीयत के मुकाबले में इमाम के दृष्टिकोण को वरीयता प्राप्त हो गयी।

दरबार के कमीने और नीच उलमा ने जो वास्तव में अज्ञानी थे, झूठे तर्क देकर बादशाह को यह समझाया कि वह इस जमाने के मालिक हैं, उनका उदय मुसलमानों और हिन्दुओं के 72 सम्प्रदायों के मतभेद को मिटाने के लिए हुआ है। शरीफ ने महमूद बस्खवानी के लेखों से यह साक्ष्य भी प्रस्तुत किया कि उसने स्पष्ट लिखा है कि 990 हि0 में झूठ को मिटाने वाले एक व्यक्ति का उदय होगा। सच्चे धर्म के मालिक के कलमे के वाक्यों के अनुसार 990 की संख्या बनती है। ख़्वाजा मौलाना शीराजी, अनिश्वरवादी नक्षत्र विज्ञानी, प्रतिष्ठित मक्का के सम्मानित लोगों की ओर से एक पत्र लेकर आया जिसमें लिखा था कि सही हदीस के अनुसार दुनिया की उम्र 7000 पूरी हो चुकी है। और अब इमाम मेहदी के उदय का समय आ गया है। इस सम्बन्ध में उसने अपना एक लेख लिख कर प्रस्तुत किया। यह सब बातें पैगम्बरी के दावे के लिए थीं।

❖❖❖

पृष्ठ ....06......का शेष

5. हर अच्छे काम के समय शैतान आकर उससे रोकने का प्रयास करता है और पवित्र कुर्आन का पाठ उच्चतम कार्यों में से है इसलिए इससे पहले अल्लाह की शरण में आ जाने का विशेष आदेश है फिर ऐसे लोगों पर शैतान का कुछ भी बस नहीं चलता।

6. परिस्थितियों के अनुसार जब अल्लाह तआला आदेशों में परिवर्तन करते और कोई आयत निरस्त (मंसूख) होती है तो मुश्रिक उस पर आपत्ति करते थे, उसका उत्तर दिया जा रहा है कि अल्लाह अधिक बेहतर जानता है कि कौन से समय कौन सा आदेश उतारा जाए फिर इसका अतिरिक्त स्पष्टीकरण भी है, इसको हजरत जिब्रईल अल्लाह के पास से ठीक ठीक लेकर आते हैं ताकि लोगों को सही रास्ता मिल जाए।

❖❖❖

क्या नहीं कहीं भगवान?

मिर्जा अहमद याकूब

इस धरती के बासी की है एक अनोखी शान
चाहे जिसको यह बना ले एक नया भगवान
और कोई–कोई तो यूं कहे, नहीं कहीं भगवान
देखा नहीं जिसे कभी, कैसे लें हम मान
देखे जिसे उसी को मानें, यह कैसा तर्क व ज्ञान
वीर्य का कतरा कभी, जो तू था कैसे बना इंसान
क्या पवन को देखा कभी है तूने, देखा कभी प्राण
माना जिस को पवन प्राण, अक़्ल से लिया पहचान
दिल की धड़कन बढ़े घटे तो होवे तू परेशान
जिगर जो बिगड़ा जीवन बिगडा, वेद का कहना मान
नींद को गालिब किस ने किया है, जो तोड़े अभिमान
नींद न आए गोली खाए तब याद करे हे! भगवान
जुबां पर होता अगर जो ताला, गूंगों में स्थान
दिल की बातें दिल में रहतीं करता कैसे बयान
नर मादा को किसने बनाया, कैसे बने पिस्तान
कैसे बनाया जिस्म को तेरे, देख खुदा की शान
आंख से अंधा यदि तू होता, क्या देखता ब्रह्माण्ड
कैसे सुनता ईश्वर वाणी, तू होता जो बे कान
अक़्ल को देखा कभी है तूने, कैसे बना विद्वान
फिर अक्ल का दावा करता क्यों है, दिल का अंधापा जान
डूबता सूरज उगता चन्द्रमा तारों भरा आस्मान
सरदी गरमी और यह वर्षा कर्ता को पहचान
उछल उछल कर बहते दरिया, डूबती नौका, कर ले ध्यान
नौका डूबे, दिल भी डोले, तब याद करे भगवान
कितनी मिसालें दूँ मैं तुझ को, कादिर को पहचान
बाडी–बिल्डर बन कर भी कब तक जियेगा जान
राख बने या खाक बने, फिर जी उठना है जान
किस की भक्ति करता था तू, पूछेगा रहमान
कड़वी–कड़वी दवा समझ कर करले इसका पान
नरक छोड़ कर स्वर्ग को पाले मेरे भाई जान
जन्नत की जो राह बताए, और चलना करे आसान
ऐसी राह को छोड़ के चलना अपना ही नुकसान
दुनिया भर के इसां देखो, यकसाँ सब इंसान
फिर भला क्यों अलग धर्म और अलग–अलग भगवान
खरा कहूं तो खोटा लागे, सत्त्य मेरा वाण
अल्लाह–अल्लाह करके मरना सुन लो खोल के कान
जन्नत का तू मालिक है पर भोला है तू भान
झुक जा, जा के, उस के आगे जो देता जीवन दान

स्वास्थ्य

अंकुरित आलू क्यों नहीं खाना चाहिए

डॉ0 पूनम तिवारी

संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन *(FAO)* के अनुसार, आलू दुनिया में सबसे ज़्यादा खाई जाने वाली सब्जियों में से एक है। यह एक पौष्टिक सब्जी है। लेकिन अगर आलू अंकुरित हो जाए तो उसे खाने से कई गंभीर स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती हैं।

आलू उस समय अंकुरित हो जाता है जब उसे ज्यादा समय तक स्टोर कर के रखा जाता है। आलू पर रोशनी पड़ने पर क्लोरोफिल की प्रतिक्रिया से वह हरे रंग का हो जाता है।

नेशनल कैपिटल प्वाइजन सेंटर के अनुसार अंकुरित आलू स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है, उसमें सेवोलिन और चाको नाइन जैसे कुछ हानिकारक अंश होते हैं जिनके कारण स्वास्थ्य की समस्याएं हो सकती है।

अंकुरित आलू खाने के नुकसानः–

- पाचन तंत्र से संबंधित समस्याएं हो सकती हैं।
- बुखार और सर में दर्द हो सकता है।
- चक्कर आ सकता है।
- त्वचा पर निशान आ सकते हैं और खुजली हो सकती है।
- साँस लेने में दिक्कत हो सकती है।
- रक्त शर्करा (ब्लड शूगर)का स्तर बढ़ सकता है।

इन लोगों को कई गंभीर नुकसान हो सकते हैंः–

डाइटीशियन डॉ0 पूनम तिवारी के अनुसार, अंकुरित आलू, ताजा आलू के मुकाबले रक्त शर्करा के स्तर को तेजी से बढ़ाते हैं। इसलिए मधुमेह रोगियों को इन्हें बिल्कुल नहीं खाना चाहिए। इसके अलावा अंकुरित आलू कुछ अन्य लोगों के स्वास्थ्य के लिए भी ज़्यादा हानिकारक हो सकते हैं, जैसेः–

- गर्भवती महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों के लिए।
- जिन लोगों का पाचन तंत्र कमज़ोर होता है।
- न्यूरोलॉजिकल रोगों वाले लोगों के लिए।
- जिनकी प्रतिरक्षा प्रणाली कमज़ोर है।
- एलर्जी से पीड़ित लोगों के लिए।

आलू अंकुरित न हों उसके लिए यह सावधानियां बरतेंः–

- आलू हमेशा ठंडी और सूखी जगह रखें।
- उसे प्याज और लहसुन से दूर रखें।
- प्लास्टिक की थैली और फिरिज में न रखें।
- आलू हमेशा हवादार स्थान पर ही रखें।
- ख़राब और अंकुरित आलू को तुरंत अलग कर दें।
- नमी से दूर रखें और ऐसी जगह पर न रखें जहाँ सूरज की रोशनी आती हो।

अंकुरित आलू क्या करें?ः–

- अंकुरित आलू को छोटे–छोटे टुकड़ों में काटकर कम्पोस्ट बिन में डाल दें। सड़ने के बाद यह मिट्टी की पोषकता बढ़ाकर पौधों की वृद्धि के लिए लाभदायक सिद्ध होगा।
- अंकुरित आलू को पीसकर उसका रस पौधों पर छिड़क दें, यह एक नेचुरल पेस्टीसाइड की तरह काम करता है और छोटे कीड़ों को दूर रखने में मदद करता है।
- अंकुरित आलू को गमले या खेत की मिट्टी में लगा सकते हैं, इस से नये पौधे उगते हैं।

❖❖❖

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू अब्दुर्रहमान नदवी

दुनिया में पहली बार वर्चुअल AI मिनिस्टरः—

राजनीति की दुनिया में अब तक आपने नेताओ और मंत्रियो को सत्ता संभालते देखा होगा। लेकिन, अल्बानिया में कुछ ऐसा हुआ है जो इतिहास में पहली बार है। प्रधानमंत्री एडी रामा (*Edi Rama*) ने शुक्रवार को ऐलान किया कि उनकी कैबिनेट में एक ऐसे मंत्री की नियुक्ति की जा रही है, जो इंसान नहीं, बल्कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेस (AI) है। जी हां, इस वर्चुअल मंत्री का नाम है डिएला *(Diella)* जिसका अर्थ अल्बानियाई भाषा मे सूरज होता है।

पीएम ने कहा, डिएला अब पब्लिक फंड से जुड़े प्रोजेक्ट्स और सरकारी टेडर्स पर निगरानी रखेगी। यह कदम भ्रष्टाचार को पूरी तरह समाप्त करने में मदद करेगा। अब सार्वजनिक निविदाएं 100% भ्रष्टाचार मुक्त होगीं। सरकार को पूर्ण पारदर्शिता के साथ काम करने में मदद मिलेगी।

हर सेकेंड 29 हज़ार मेसेज, AI इस तरह बदल रहा है हमेंः—

ChatGPT जैसे AI चैटबॉट्स ने काम करने का तरीक़ा बदल दिया है। मैनेजमेंट, एजुकेशन, हेल्थ और रिसर्च जैसे नॉलेज—आधारित काम अब पहले से कहीं ज्यादा आसान और तेज हो गए हैः—

70 करोड़ यूजरः—

2022 में लॉन्च हुए ChatGPT को 70 करोड़ से ज़्यादा लोग इस्तेमाल कर रहे हैं, यानी हर 10 में से एक वयस्क यूजर है। OpenAI के साथ हार्वर्ड और ड्यूक यूनिवर्सिटी की रिसर्च के मुताबिक, हर सेकंड करीब 29 हजार मेसेज ChatGPT पर भेजे जा रहे हैं।

सलाह से गाइडेंस तकः—

40% यूजर्स आर्टिकल लिखने या ईमेल ड्राफ्ट करने के लिए इसका इस्तेमाल करते है। 29% चैट्स सलाह या गाइडेंस के लिए होती हैं, 24% लोग किसी जरूरी जानकारी की तलाश में आते हैं, जबकि तकनीकी यानी प्रोग्रामिंग से जुड़े मेसेज सिर्फ 4.2% है।

महिलाएं ज्यादा एक्टिवः—

शुरुआत में ChatGPT के 80% यूजर पुरुष थे, लेकिन जुलाई 2025 तक महिलाओं की हिस्सेदारी पुरुषों से भी आगे निकल गई। सबसे ज्यादा एक्टिव यूजर 18 से 25 साल के युवा है, जो कुल चैट्स का 46% भेजते हैं।

देश के रेल नेटवर्क से जुड़ेगा मिज़ोरमः—

मिजोरम के मुख्यमंत्री लालदुहोमा ने शुक्रवार को कहा कि प्रधानमत्री नरेन्द्र मोदी के बैराबी—सैरग रेलवे लाइन के उद्घाटन के साथ ही आइजोल ने रेलवे मैप पर अपनी मौजूदगी दर्ज करा ली। सैरग राजधानी आइजोल के पास है। 51.38 किलोमीटर लंबी इस रेलवे लाइन में 12.8 किलोमीटर तक फैली 48 सुरंगे, 55 बड़े पुल और 87 छोटे पुल शामिल है। पुल संख्या 196 की ऊंचाई 104 मीटर है, जो कुतुब मीनार से भी ऊंचा है।

अमेरिका में उगाया सबसे लम्बा सूरजमुखीः—

अमेरिकी प्रान्त इंडियाना में यूक्रेनी प्रवासी एलेक्स बाबिच ने अपने आंगन में दुनिया का सबसे लम्बा (35 फुट 9 इंच) सूरजमुखी का फूल उगाया है। इस फूल का उपनाम 'क्लोवर' है और बुधवार को 'गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स' ने इसकी पुष्टि की है।

100 साल बाद नदी मे नहाने की इजाजतः—

100 साल बाद फिर से लोग पैरिस की मशहूर सीन नदी में तैरते नजर आए। शनिवार सुबह लोगो ने खुशी—खुशी नदी मे छलांग लगाई। पहली बार है जब आधिकारिक रूप से नदी मे तैरने की इजाजत मिली है। सीन नदी में तैरना 1923 से बैन था क्योंकि पानी मे गंदगी और जहाजों की आवाजाही से खतरा रहता था। ओलिपिक खेलों से पहले करीब 1.5 अरब यूरो खर्च कर नदी की सफाई कराई गई। अब ज़्यादातर दिनो में नदी का पानी यूरोपीय मानकों पर खरा उतरता है। शनिवार सुबह लोग तौलिया लेकर लाइन में खड़े थे। सभी को सुरक्षा के लिए पीले रग की लाइफबॉय पहननी पड़ी। कुछ लोगो ने खुशी जताई तो कुछ ने साफ—सफाई पर शक भी जताया। पर्यावरण अधिकारियों ने कहा कि पानी में बैक्टीरिया की मात्रा तय मानको से बहुत कम है। लेकिन तय इलाको के बाहर तैरना अब भी बैन है।

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳- ٹیگور مارگ
لکھنؤ- ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक: 22/09/2025 ________ تاریخ

अहले ख़ैर हज़रात से !

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा, हज़रत मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी, दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंजाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों को सीने से लगाए हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था यानी नये ज़माने में इस्लाम की प्रभावी और सही व्याख्या, दीन और दुनिया तथा इल्म और रूहानियत को यकजा करने की कोशिश, दीन से दूरी और नफ़रत को ख़त्म करने के प्रयास, इस्लाम पर विश्वास और इस्लामी उलूम की बलन्दी और विशेषता के ऐलान, दीने हक़ से वफ़ादारी और शरीअ़त पर मज़बूती से जमने के सिद्धान्तों पर कायम है।

आप से हमारी दरख़्वास्त है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत, (उपयोगिता) को समझते हुए पूरी फ़य्याज़ी और फ़राख़दिली और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर मदद फ़रमाएं कि हिन्दुस्तान में दीन के क़िलों की हिफ़ाज़त की इससे बेहतर कोई शक्ल और इससे ज़्यादा मज़बूत कोई सदक़–ए–जारिया नहीं।

लिहाज़ा आप हज़रात से गुज़ारिश है कि अपने सदक़ात अतियात, चेक या ड्राफ़्ट के ज़रिये और ऑन लाइन नदवतुल उलमा के निम्नलिखित एकाउन्ट में ट्रान्सफ़र फ़रमायें, ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में आपका सहयोग बहुत ही अहमियत रखता है। अल्लाह तआला हम सबकी कोशिशों को क़ुबूल फ़रमाए और उनको हमारे लिए आख़िरत का ज़ख़ीरा बनाए। आमीन।

मौलाना सैयद अम्मार अब्दुल अली हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम दारुल उलूम नदवतुल उलमा

SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW- IFSC: SBIN0000125
ONLINE DONATION LINK: https://www.nadwa.in/donation

SCAN HERE TO VISIT THE WEBSITE FOR DONATION

ZAKAT	ATIYA	BUILDING
NADWATUL ULAMA	NADWATUL ULAMA	NADWATUL ULAMA

UPI करते समय रिमार्क में मद (ज़कात/अतिया/तअ़मीर) अवश्य डालें।

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं08736833376 पर इत्तिला ज़रूर करें।

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को Section 80G income Tax act 1961के तहत छूट प्राप्त होगी।

Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/Website: www.nadwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/07945
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2024 To 2026
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 24 - Issue 08

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM
Tel.:(0522) 2740406
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC & RESEARCH CENTRE
Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.
विशेषज्ञ
पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग
24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE
G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

Printed & Published by Mohammad Taha Athar, Tagore Marg, Badshah Bagh, Lukcnow - 7
on behalf of Majlis-e-Sahafat-wa-Nashriyat at Kakori Offset Press, BN Varma Road, Lucknow - 3